ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०२२

मई-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

वो प्रताप था वीर शिरोमणि
आन बान का स्वामी था
देशोन्नति हित, कष्ट गौण हैं
जीवन से सिखलाया था
कष्टों के तूफानों में भी वह
किंचित ना घबराया था
ऐसे महापुरुष प्रणम्य हैं,
ऋषि ने यह बतलाया था

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १५

१२७

सफलता के 6 मूल मंत्र

पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

MDH
मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२२
वैशाख शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत् २०७९
दयानन्दाब्द १९८

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

May - 2022

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

०४ वेद सुधा
०८ सत्यार्थ मित्र बनें
०९ जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे
१२ बहानेबाजी का युग है यह
१४ जब मनुष्य की करुणा का .....

हलचल २१

२३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२२
२६ स्वास्थ्य- एलोवेरा है गुणकारी
२७ कथा सरित- अहिंसा की अभिव्यक्ति
३० सत्यार्थ पीयूष- वेद ज्ञान की .....

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - ११ | अंक -०१ | मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।। – यजुर्वेद ४०/१६

अर्थ– हे (अग्ने) स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइए और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिए। इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार का स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

विज्ञान–

इस मंत्र में सबके आत्मरूप, परमकारुणिक, सदुपदेशक, विश्ववाद्य, विश्ववन्द्य, विद्वद्विलासक परमेश्वर के दो सम्बोधन 'अग्नि' और 'देव' विद्यमान हैं। प्रथम मंत्र में कहे अनुसार इन दोनों सम्बोधनपरक शब्दों में से किसी को भी पहले और बाद में रख सकते हैं। पर संस्कारविधि में ऋषि ने 'अग्नि' को प्रथम स्थापन किया है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि 'अग्नि नाम परमात्मा का क्यों है?

उत्तर– यद्यपि ऋषि दयानन्द के आने से पहले केवल भौतिकाग्नि को ही अग्नि समझा जाता था। वह तो ऋषि का क्रान्तिकारी चमत्कार था कि लम्बे समय तक लिखित प्रश्नोत्तरों से यह सिद्ध हुआ कि- परमात्मा का नाम 'अग्नि' है। हम यहाँ पर मात्र यह स्पष्ट कर रहे हैं कि परमात्मा 'अग्नि' कैसे कहा जा सकता है? वेद की व्याख्या में वेद ही सूर्यवत् प्रमाण हैं। उसके अनुसार एक सुस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत है, जिससे कि यह सिद्ध हो जायेगा कि वेद स्वयं ईश्वर को 'अग्नि' कह रहा है। यजुर्वेद का मन्त्र इस प्रकार है-

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा:।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआप: स प्रजापति:।। – यजुर्वेद ३२/१

जो सच्चिदानन्दादि लक्षणवाला ब्रह्म है, वही अग्न्यादि नाम से इस मंत्र में कहा गया है। दूसरा यह कि निरुक्तकार ने एक बड़ी बात कही है कि-

स न मन्येतायमेवाग्निरिति। अपि एते उत्तरे ज्योतिषी अग्नी उच्येते। – निरुक्त ७/१६
उत्तरे ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजेते। – निरुक्त ७/२०

यहाँ 'अग्नि' शब्द से परमेश्वर और भौतिक अग्नि दोनों ही ग्रहीत हैं, क्योंकि इस अग्नि नामधेय से दोनों उत्तर ज्योति अर्थात् अनन्त ज्ञानप्रकाशयुक्त परमेश्वर जो कि प्रलय के उत्तर (बाद में) सबसे सूक्ष्म तथा आधार है, उसका और जो विद्युत रूप गुणवाला सबसे सूक्ष्म स्थूल पदार्थों में प्रकाशित और प्रकाश करने वाला भौतिक अग्नि है। इन दोनों का यथावत् ग्रहण किया है। अतः सिद्ध है कि अग्नि नाम से यहाँ परमात्मा का सम्बोधन है, जो स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप और अपने प्रकाश से सब जगत् का प्रकाश करनेहारा है। सकल सुखदाता होने से 'देव' है। 'देव' शब्द वेद में इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है- वे अर्थ हैं-

'क्रीड़ा, विजिगीषा= जीतने की इच्छा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्त, कान्ति और गति। अर्थात् जो अधर्म अन्यायकारी शत्रुओं और काम क्रोधादि शत्रुओं का विजिगीषक नाम जीतने की इच्छा पूर्ण करनेवाला सब जगत् का प्रकाशक, स्वभक्तों को आनन्द देने वाला होने से सब सुखों के दाता परमेश्वर देव हैं।

मन्त्र के आगे का ऋषि अर्थ समझने के लिए एक गंभीर रहस्य का अवगमन करना उचित समझते हैं। वह यह है कि मनुष्यों को नैमित्तिक= सहाय रूपी ज्ञान में स्वतंत्रता नहीं है। और अपने स्वाभाविक ज्ञानमात्र से कुछ भी ज्ञानोन्नति करना असम्भव है। क्योंकि वह जीव का जो स्वाभाविक ज्ञान है सो साधनकोटि में है। साधनकोटि से तात्पर्य साधन मात्र है। मतलब यह है कि वह किसी विद्वान् से शिक्षा ग्रहण में साधन है और पशुओं के समान व्यवहार का भी साधन है। परन्तु वह स्वाभाविक ज्ञान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विद्या का साधन स्वतंत्रता से बिना नैमित्तिक= सहायक ज्ञान के नहीं हो सकता। जैसे पिता अपने सन्तानों

पर करुणा धरता है कि हमारे सन्तान सर्वविध सुख पावें, वैसे ही ईश्वर हम लोगों पर माता-पिता के समान अपनी करुणा से कृपा दृष्टि रखता है। इसी कारण से ही वह ऐसे समय में जब सृष्टि की आदि में पढ़ने वा विद्वान् गुरुओं की शिक्षा की कुछ भी परम्परा वा व्यवस्था नहीं थी, तब हम सबके उद्धार के लिए ईश्वर ने अपना ज्ञान दिया। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्ष रूप होकर फिर भी बीज के भीतर रहता है, उसी प्रकार ईश्वर ने अपनी विद्या-बीज से ज्ञान को वृक्ष रूप करके अपने विद्या के भीतर रखा। यह ईश्वर की विद्या अनन्त

है, जो स्वार्थ और परार्थ के लिए परोपकारी प्रभु का सामर्थ्य है। अगर वह परमेश्वर अपनी विद्या से ज्ञानधर्मोपदेश न करे तो उस विद्या से जो परोपकार करना गुण है, उसका वह गुण न रहे। इस गूढ़ विज्ञान को हम इस प्रकार स्पष्ट करते हैं-

जो वह भूतकालिक, अनागत= भविष्यत्कालिक और वर्तमानकालिक पदार्थों में से किसी एक का अथवा समुच्चय= सामूहिक रूप अतीन्द्रिय ज्ञान है, जो किसी में अल्प=न्यून है और किसी में बहुत=अधिक है। अभिप्राय यह है कि इस ज्ञान की किसी में सीमा नहीं है। परन्तु जिसमें बढ़ता-बढ़ता हुआ ज्ञान निरतिशय= अतिशयता रहित= अतिक्रान्तता (जिसको कोई अतिक्रमण न कर सके) से रहित होकर रहे, वही सर्वज्ञ ईश्वर है। अर्थात् ईश्वर के अतिशय ज्ञान होने से सर्वज्ञबीज की काष्ठा प्राप्ति अर्थात् चरमसीमा है। उदाहरण देते हैं कि जिससे कि बुद्धिमान् लोग याथातथ्य रूप से ग्रहण कर सकें।

जैसे पृथिव्यादि स्थूल भूतों के छोटे से छोटे कण= परमाणु तक अल्प परिमाण तथा इनकी प्रकृति-आकाश पर्यन्त पदार्थों की पराकाष्ठा= काष्ठा प्राप्ति-चरमसीमा है, यह प्रकृति सर्व संसार वृक्ष की बीज है, जैसे ही जिस ईश्वर में सर्वज्ञान वेदवृक्ष की काष्ठा प्राप्ति= चरम सीमा है, वह सर्वज्ञ बीज है। यह बीज ही विद्या है, जिसमें ज्ञानवृक्षरूप होकर उसी सर्वज्ञ विद्या बीज में बना रहता हैं। यह विद्या ईश्वर का सामर्थ्य है। अतएव ऋषि ने इस अद्भुत रहस्य का उद्घाटन **'वेदानां तेनैव स्वविद्यातः सृष्टतत्वात्'** कहकर किया है जिसका अर्थ कि- 'उस ईश्वर ने अपनी विद्या से वेदों को सृष्ट किया है।' जैसे बीज में जो गुण होते हैं, वही गुण उस वृक्ष में होते हैं और फिर वह वृक्ष स्वयं उस बीज में रहता है, उसी प्रकार ईश्वर के सामर्थ्य अनन्त विद्याबीज से उत्पन्न वृक्ष वेद में ही अनन्तता विद्यमान रहती है। इसी प्रकार प्रकृति में जो सत्व, रजस्, और तमस् गुण हैं, वे उसके कार्य संसार में भी विद्यमान रहते हैं और सर्वकार्य संसार उस प्रकृति बीज में।

एक दार्शनिक तथ्य का इस प्रसंग में और उद्घाटन करते हैं-

एक दार्शनिक तथ्य है कि प्रत्यक्ष प्रमाण से अनुमान प्रमाण बड़ा है। क्योंकि प्रत्यक्ष से किसी पदार्थ के एक देश का ही ज्ञान होता है, परन्तु उस पदार्थ के अन्य गुणों का ज्ञान अनुमान से ही हेाता है। परन्तु अनुमान प्रमाण भी किसी अतीन्द्रिय पदार्थ का सामान्यज्ञान कराके समाप्त हो जाता है, विशेष ज्ञान नहीं करा सकता। किन्तु विशेष ज्ञान की सिद्धि आगम प्रमाण अर्थात् वेद से ही करनी चाहिए। ऋषि-मुनि भी ज्ञानवान् हो सकते हैं, परन्तु ज्ञान की सीमा=निरतिशयता=काष्ठाप्राप्ति=चरम सीमा=सर्वविद्या के बीज सर्वज्ञ नहीं हो सकते। वह ईश्वर ही भूतों= जीवों पर अनुग्रह करता है कि महाप्रलय के बाद सांसारिक पुरुषों के उद्धार के लिए ज्ञानधर्मोपदेश करता है, जो शब्द-अर्थ सम्बन्ध रूप है। ईश्वर नित्य है, उसका सर्व विद्यामय सामर्थ्य नित्य होने से ज्ञानस्थ शब्द-अर्थ सम्बन्ध भी नित्य है, जो ज्ञान में एकरस बने रहते हैं।

जीव के सामर्थ्य की अवधि प्रत्यक्ष देखने में आती है। इसलिए सब जीवों को उचित है कि अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए सदैव परमेश्वर की उपासना किया करें। इसी ऊपर किए गए रहस्योद्घाटन को ऋषि ने इस मंत्र में यह कहकर किया है- 'जिससे आप सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं' अर्थात् उपासक दृश्य-अदृश्य, चित्र-विचित्र इस आश्चर्यकारी स्थूल-सूक्ष्म पदार्थों की रचना को देखकर इस अग्निदेव प्रभुवर से कह उठते हैं कि जिससे अर्थात् सर्वविद्यामयत्व से आप सम्पूर्ण विद्यायुक्त हो, कृपा करके **'नय सुपथा'** अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रज्ञान वा उत्तम कर्म प्राप्त कराइए।

उपासकों की इस अभिव्यञ्जित ध्वनि में परमेश्वर से आरम्भ करके तृणपर्यन्त पदार्थों में अनन्त सर्वविद्यामय सामर्थ्य से उत्पन्न सर्वविद्या से युक्त ज्ञान है, उसका साक्षात् बोध का अन्वय ही है। इससे ईश्वर का अनुभव ही मुख्य है। सब वेदों का मुख्य तात्पर्य सब पदार्थों से प्रधान **ईश्वर** का प्रतिपादन है।

इस मंत्र के अर्थ में 'धर्मयुक्त आप्त लोगों के' साथ एक 'अच्छे' शब्द का विशेषण कोई साधारण बुद्धि या कौतूहल नहीं है, अपितु धर्मयुक्त आप्त लोगों के लिए उनके वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने के लिए एक चमत्कारिक प्रयोग है। संभवतः किसी विचारक का ध्यान अच्छे शब्द के अर्थ पर गया हो, क्योंकि सर्व साधारण जनमानस में इस शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थयुक्त व्यवहार के लिए किया जाता है। इसलिए हम कौतूहल पूर्ण चमत्कारिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं-

'अच्छे' शब्द का अर्थ **'निर्मलस्वरूप'** है। अर्थात् प्रभु की उपासना से जिनके समाधि योग से अविद्यादि मल नष्ट हो गए हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में जिनका चित्त लग गया हो, जिनके आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से परिपूर्ण हो गये हों- वे **'अच्छे'** हैं। धर्मयुक्त जो विद्वान् परमात्मा के भीतर ही सब प्राणी-अप्राणियों को विद्या धर्म और योगाभ्यास करने के पश्चात् ध्यानदृष्टि से देखता है और सब प्रकृत्यादि पदार्थों में आत्मा को भी देखता है, वह विद्वान् उसके पीछे संशय को प्राप्त नहीं होता अर्थात् सर्वव्यापी, न्यायकारी सर्वज्ञ सनातन सबके आत्मा अन्तर्यामी सबके द्रष्टा परमात्मा को जानकर सुख-दुःख, हानि-लाभों में अपने आत्मा के तुल्य सब प्राणियों को जानकर धर्मात्मा होते हैं, तथा जिस परमात्मा, ज्ञान, विज्ञान वा धर्म में विशेषकर ध्यानदृष्टि से देखते है। अर्थात् परमात्मा के सहचारी प्राणिमात्र को अपने आत्मा के तुल्य जानते हैं। जैसे अपना हित चाहते, वैसे ही अन्यों में भी वर्तते हैं। एक अद्वितीय परमेश्वर के शरण को प्राप्त होते हैं, उनको मोह-शोक और लोभादि कदाचित् प्राप्त नहीं होते और अपने आत्मा को यथावत् जानकर परमात्मा को जानते हैं, वे निर्मलस्वरूप=अच्छे धर्मात्मा ही आप्त लोग हैं। सत्य के आचरण से जो मार्ग खुलता है, और जिस सत्यधर्मानुष्ठान से प्रकाशित अर्थात् जिस मार्ग से आप्तकाम, धर्मात्मा विद्वान् चलके सत्य सुख को प्राप्त होते हैं, जहाँ सत्यधर्म का परमनिधान= अधिकरण ब्रह्म है, उसको वे प्राप्त होते हैं। क्योंकि सत्यधर्म के आचरण का ग्रहण और असत्याचरण का त्याग, सब मनुष्यों का इसी मार्ग से होता है। उस मार्ग से **'विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रज्ञान वा उत्तम कर्म प्राप्त कराइये'** अर्थात् अपनी अनन्त विद्यामय वेदज्ञान से विज्ञान अर्थात् अवयव विभागपूर्वक ज्ञान जो योग से प्राप्त धन है तथा राज्यादि ऐश्वर्य अर्थात् योगी होकर किसी राजा के राज्य में न विचरण कर प्रभु के अनन्त अखण्ड साम्राज्य में विचरण करने से प्राप्त ईश्वर के सर्वत्र भाव प्रधान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रज्ञान= सब प्रशस्त ज्ञान वा उत्तम कर्म अर्थात् जो उत्तम सत्वगुणयुक्त होकर कर्म करते हैं, वे सब वेदों के वेत्ता, सब सृष्टिक्रम विद्या को जानकर अनेक विमानादि यानों के बनानेहारे, धार्मिक सर्वोत्तम बुद्धियुक्त और अव्यक्त के जन्म तथा प्रकृतिवशित्व सिद्धियों को ईश्वर की कृपा से प्राप्त करते हैं। सो आप कृपा करके हम लोगों को यह सब कुछ अच्छे धर्मयुक्त आप्तलोगों के मार्ग से प्राप्त कराइये। इससे यह दृढ़ निश्चयपूर्वक जान लेना चाहिए कि इसके अतिरिक्त और मार्ग नहीं है।

अब आगे ऋषि मन्त्रार्थ करते हैं कि-

'और हमसे कुटिलतापूर्वक पापरूप कर्म को दूर कीजिए'

उपासक पूर्ण पुरुषार्थ के अनन्तर उस सर्वसामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर से प्रार्थना करता है कि कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म दूर आप ही कर सकते हैं, मेरे सामर्थ्य में यह शक्ति नहीं कि मैं इन कुटिलायुक्त पापरूप कर्मों को दूर कर सकूँ। कुटिलता क्या है? आत्मा के विपरीत मन में कुछ और है, मन से भिन्न वचन में कुछ और है, और वचन से भिन्न कर्म में कुछ और है- यही कुटिलता है, और इस कुटिलता से जो कर्म किया जाता है, वही कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म है। साधारण दृष्टि से विचार करें तो जितना क्लेशमूल कर्माशय है, वह काम, क्रोध, लोभ और मोह से उत्पन्न है, सब कुटिलतायुक्त कर्म भी इन्हीं के वशीभूत होते हैं। इन काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि शत्रुओं के निवारण के लिए किसी के पास बल नहीं है। यह ईश्वर-बल उपासना से ही प्राप्त होता है। उस जीवात्मा का सौभाग्य है कि जो यह ईश्वर-बल उसको प्राप्त हो जाए। प्रमाणस्वरूप मन्त्र देखिए-

चित्रं देवानामुदगादनीकम्। - यजुर्वेद ६/४२

वह अद्भुतस्वरूप परमात्मा **'देवानाम्'** दिव्यगुण युक्त देवताओं= विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशित रहता है। **(अनीकम्)** जो सकल मनुष्यों के और हमारे सब दुःख नाश के लिए काम-क्रोधादि शत्रु विनाशार्थ जो परम उत्तम बल है, वह परमात्मा हमारे हृदयों में यथावत् प्रकाशित रहे। उसको छोड़कर मनुष्यों के लिए सर्व सुखकर शरण अन्य कोई नहीं है, ऐसा निश्चय से

जान लेना चाहिए। उक्त अर्थानुसार काम-क्रोधादि शत्रु निवारण के लिए जो बल ईश्वर है, इन शत्रुओं से मरने नहीं देता, वह 'अनीक' कहलाता है। क्योंकि वह बल ही हमारे जीवन का सहारा हो जाता है। इसी परमात्म बल से कुटिलतायुक्त पापकर्म छूट जाते हैं और जो आत्मा में होता है, वही मन में, जो मन में वही वचन में, जो वचन में वही कर्म में होता है। जीवात्मा के लिए यही ऋजु अर्थात् सीधा, सरल, निश्छल और निष्कपट पुण्यमार्ग है, जो आनन्द देता है। वह उपासक जीव ईश्वर के अनेक=बहुत=असंख्य गुणों की स्तुति करता हुआ= उस प्रभु के सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, चेतन व्यापक, अन्तर्यामी आदि गुणों के सहित और अनादि, अनन्त, अजन्मा, अमृत्यु, रूप-रस गन्धादि रहित निर्गुण अर्थात् जगत् के गुणों से पृथक् ईश्वर को जो ध्यान करता तथा परमेश्वर के गुण और उपकारों का ध्यान कर, उसके सहाय की याचना उत्तम कर्मों में सदा चाहते हुए और यह पश्चात्ताप करते हुए कि मनुष्य शरीर धारण करके हम लोगों से जगत् उपकार कुछ भी नहीं बनता है, उसके सामने नम्रतापूर्वक उसकी प्रशंसा सदा करता रहे, जिससे वह ईश्वर हम लोगों को सदा आनन्द देते रहें। यही भाव ऋषि के किए अर्थ का है-

'इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।' और अन्त में जैसे रस को प्राप्त हुई नाभिरस उत्पन्न कर शरीर के सब अवयवों को पुष्ट करती, वैसे सेवन किए आप्तलोग तथा उपासना किया हुआ ब्रह्म पक्षपातसहित कुटिलतादि अपराधरूप कर्म तथा द्वेष को निवृत्त कराकर सब जीवों की रक्षा करते और जीव सदा आनन्द में रहते हैं। इसी आनन्द से ये जीव परमेश्वर के यन्त्रवत् हो जाते हैं। फिर ईश्वर जैसी चेष्टा इनसे कराता है, वैसे ही ये शरीर से अपनी चेष्टाएँ करते हैं।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली

साभार- उपासना-विज्ञान

आपकी लोकप्रिय पत्रिका
सत्यार्थ सौरभ
को सम्बल प्रदान करने हेतु
श्री मानसिंह जी चौहान,
डूंगरपुर (राजस्थान) ने संरक्षक
सदस्यता (₹११०००) ग्रहण
की है। अनेकशः धन्यवाद।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी. एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ. मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।**

न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्री दिनेश विद्यार्थी, फरीदाबाद

श्रीमती शशि गोयल, जयपुर

डॉ. आनन्द शर्मा, दिल्ली

श्री महेन्द्र आर्य, मुम्बई

श्रीमती रेणु आर्या, मुम्बई

श्री ओमप्रकाश झँवर, जयपुर

श्री विवान कालरा, उदयपुर

श्रीमती मोहिता मून्दड़ा, पूणे

श्रीमती संचिता जैन, उदयपुर

श्रीमती सुरुचि तापड़िया, इन्दौर

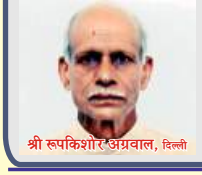

श्री रूपकिशोर अग्रवाल, दिल्ली

श्री राकेश तापड़िया, कोटा

आर्य समाज, रोहिणी– दिल्ली

श्री मधुर प्रकाश आर्य, दिल्ली

श्रीमती सरिता कादियान
मुजफ्फरनगर

श्री जी. एल. आगाल, उदयपुर

जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे

पुरानी दन्त कथाओं में एक कथा इस प्रकार कही जाती है। एक बार बादशाह ने पूछा कि बैंगन कैसा होता है, क्या उसका सेवन आनन्दप्रद है? दरबारियों ने उत्तर दिया कि बैगन बहुत अच्छी सब्जी है, स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पौष्टिक भी। और हो क्यों न बैंगन के ऊपर तो मुकुट होता है, वह तो सब्जियों का राजा है। कहने का तात्पर्य यह है कि दरबारियों ने बैंगन की प्रशस्ति में अपनी सारी योग्यता खर्च कर दी। अब हुआ यूँ कि बादशाह ने इस प्रशंसा के चलते सब्जी कुछ ज्यादा ही खा ली। उसे अफारा हो गया बड़ा बैचैन हो गया। जैसे तैसे रात कटी तो सुबह उन दरबारियों को बुलाया और कहा कि तुम सब जाहिल हो। बोलो बैंगन ने मेरी हालत खराब कर दी। वो कहाँ का अच्छा हुआ? दरबारियों ने तुरन्त बैंगन की जितनी बुराई कर सकते थे, की। बादशाह हैरान होकर बोला कि कल तो तुम बैंगन की तारीफ कर रहे थे फिर आज बुराई क्यों? दरबारी विनम्रता से बोले कि हुजूर हम आपकी नौकरी करते हैं बैंगन की थोड़े ही।

यह पुरानी कथा हमें स्मरण क्यों हो आयी? कारण बनी दिल्ली विधान सभा की एक बेशर्म दृश्यावली। जब दिल्ली विधान सभा में मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की, फिल्म 'द काश्मीर फाइल्स' को लेकर अत्यन्त निम्न स्तर की टिप्पणी पर उनके पैशाचिक ठहाके के साथ मानो होड़ लगाते हुए और यह साबित करने की तत्परता में कि वे केजरीवाल के सबसे बड़े वफादार हैं न कि फिल्मकार के वा सत्य के अथवा भारतीय इतिहास में घटे उन बेहद दर्दनाक क्षणों के जो कि मानवता के माथे पर कलंक हैं, से उनका कोई सरोकार है वा उसके प्रति उनकी कोई संवेदना है, वे भी अपने आका की प्रसन्नता के लिए उन ठहाकों में सम्मिलित हो गए। क्या यह हमारे समाज के सर्व प्रतिष्ठित लोग हैं जिन्हें हम चुनकर विधान सभाओं में भेजते हैं? अगर ऐसा है तो इससे गलत निर्णय कुछ नहीं था।

अब आप कह सकते हैं कि हमने उन ठहाकों को पैशाचिक क्यों कहा? इसलिए कि फिल्म काश्मीर फाइल्स किसी को पसन्द हो या न हो, परन्तु यह कोई आम फिल्म नहीं है। यह तीन लाख काश्मीरी पंडितों द्वारा जिया गया दर्द है। राजनीति की बात पृथक है, परन्तु कौनसा संवेदनशील व्यक्ति ऐसा होगा जिसकी आँखें इसे देख नम न हो जाये और जिसकी जबान इसकी बात करते काँप न जाय? इसकी चर्चा जिन शब्दों में अरविन्द केजरीवाल ने की वह अप्रत्याशित थी और अमानवीय तो निश्चित रूप से थी अतः इस पर ठहाके और उन ठहाकों को समवेत स्वर देने वाले सभी प्रयत्न पैशाचिक थे। जिस तरह वो और उनकी पार्टी के नेता कश्मीरी हिन्दुओं के नरसंहार पर ठहाके लगाते हुए देखे गए, वो उनकी संवेदनहीनता को दर्शाता है। कोई अपने आप को जनता जनार्दन का कल्याण करने वाला मुख्यमंत्री होने का दावा भी करे और ऐसी बेशर्म हँसी हँसे, यह कैसे हो सकता है? यह बात गले नहीं उतर रही। पर शायद यही अरविन्द के चरित्र की विशेषता है। और यह आलेख भी इसी दृश्य के जेहन में अटक जाने का परिणाम है। प्रसंगवश कुछ तथ्यों की चर्चा भी होगी ही जो यद्यपि केजरीवाल जी के मूल चरित्र को दर्शाते हैं

फिर भी जनमानस की स्मृति अल्पजीवी होने का लाभ अरविन्द जी को मिल जाता है।

उक्त अवसर पर विधानसभा में बोलते हुए केजरीवाल जी ने स्पष्ट तौर पर काश्मीर फाइल्स को झूँठी पिक्चर कहा, परन्तु आदत के मुताबिक यह नहीं बताया कि वे कौनसे स्थल हैं जो झूंठे हैं। और आश्चर्य यह है कि उन्होंने बिना फिल्म देखे यह दावा ठोक दिया और वह भी किसी मित्र के साथ गपशप में नहीं बल्कि विधानसभा जैसे मान्य सदन में। हमने द काश्मीर फाइल्स को देखा है और हमारी सम्मति में इस फिल्म में काश्मीरी हिन्दुओं के ऊपर जो हृदय विदारक अत्याचार दिखाए हैं वे कम भले ही हों पर अतिरेक अथवा झूंठे बिलकुल नहीं हैं।

कभी-कभी लगता है कि राजनीतिज्ञ क्या सर्वथा संवेदनाओं और नैतिकताओं को तिलांजलि देने से ही निर्मित होता है? बेशर्मी क्या इनका उपादान कारण है? द काश्मीर फाइल्स को भाजपा शासित प्रदेशों की सरकारों ने कर मुक्त कर दिया है। दिल्ली में भी यह मांग की जा रही थी कि द काश्मीर फाइल्स को करमुक्त किया जाय, और यह यकीनन पहली फिल्म नहीं होगी जिसके लिए यह मांग की गयी। फिल्म को करमुक्त करना या न करना राज्य सरकार का अधिकार है केजरीवाल भी यदि नहीं चाहते तो करमुक्त न करते परन्तु उस पर विधान सभा में तंज करना और यह सलाह देना कि 'विवेक अग्निहोत्री फिल्म को यू ट्यूब पर डाल दें सब फ्री ही फ्री हो जाएगा सभी मुफ्त में देख लेंगे' खेदजनक है। यहाँ दो प्रश्न उठते हैं-

प्रथम- इससे पूर्व भी निर्माताओं ने अपनी अपनी फिल्मों को कर मुक्त करने की बात कही होगी और केजरीवाल जी ने नहीं मानी होंगी, ठीक है, इसमें कोई ऐतराज की बात नहीं है पर क्या उन्होंने उन निर्माताओं को अपनी फिल्म यू ट्यूब पर डालने की सलाह दी? जी नहीं, तो फिर द काश्मीर फाइल्स ही क्यों?

दूसरे क्या किसी फिल्म को करमुक्त उन्होंने इससे पूर्व नहीं किया? जी हाँ किया निल बटा सन्नाटा, सांड की आँख, दंगल और भी। फिर द काश्मीर फाइल्स को भी किया जा सकता है। आखिर इसके निर्माताओं ने इतिहास की एक ऐसी क्रूर गाथा से पर्दा हटाया है जिसे दशाब्दियों में दफन कर दिया था। पर नहीं। चलिए आपका अधिकार है, परन्तु यू ट्यूब पर डालने की सलाह देना, ठहाकों से युक्त तंज, और इसकी रिकार्ड कमाई पर कटाक्ष बता रहे हैं कि केजरीवाल जी और उनके मित्रों को इस फिल्म से कितना द्वेष है कि अगर उनकी चलती तो वे इस फिल्म को प्रदर्शित ही नहीं होने देते। पर इस विद्वेष का कारण समझ नहीं आता सिवाय किसी सम्भावित राजनीतिक लाभ के। इस फिल्म के विरुद्ध लगता है पूरी पार्टी खड़ी है। राज्यसभा में संजय सिंह कहते हैं कि २०० करोड़ तो कमा लिए और कितना कमाओगे? संजय जी को याद नहीं रहा कि भारत में न जाने कितनी फिल्में २०० करोड़ से ऊपर कमा चुकी हैं क्या उनके निर्माताओं को यह सुझाव कभी दिया कि भाई बहुत कमाई हो गयी अब बन्द करो। नहीं, तो फिर यह ज्ञान विवेक अग्निहोत्री को ही क्यों? इसी प्रकार कहा जा रहा है कि फिल्म की कमाई काश्मीरी पंडितों के कल्याण के लिए दे देनी चाहिये। यह भी कितना धूर्तता पूर्ण सुझाव है। फिल्म ८३ जो कि भारत द्वारा प्रथम बार विजित विश्वकप क्रिकेट पर बनी थी इसे केजरीवाल जी ने करमुक्त भी किया था, उसके निर्माताओं को लाभ की राशि क्रिकेट खिलाड़ियों को देने की सलाह भी नहीं दी? क्यों? सैनिकों के बलिदान को लेकर 'बार्डर', महिला हॉकी को लेकर 'चक दे इण्डिया', बाक्सिंग के ऊपर 'मेरी कॉम', कृषकों को लेकर 'लगान' और न जाने कितनी ऐसे विषयों को लेकर फिल्में बनीं पर उनके निर्माताओं को यह ज्ञान क्यों नहीं दिया कि लाभ राशि सैनिकों, महिला क्रिकेट खिलाड़ियों, महिला बाक्सरों अथवा कृषकों को दे दिया जाय? फिर यह ज्ञान विवेक अग्निहोत्री को ही क्यों ?

काश्मीरी पण्डितों की भलाई करने की सलाह अग्निहोत्री को देकर तुलनात्मक रूप से उसे विशुद्ध व्यापारी और अपने को काश्मीरी पण्डितों का सच्चा हितैषी सिद्ध करने की नीयत से और अपने पैशाचिक अट्टाहस से उपजे जन आक्रोश को कम करने की नीयत से कई स्थापित राष्ट्रीय चैनलों पर केजरीवाल जी ने साक्षात्कार देते हुए दावा ठोक दिया कि लोग तो दिखावा करते हैं जबकि उन्होंने तो बिना प्रचार के ही उनकी वास्तविक सहायता कर दी।

उन्होंने २३३ कश्मीरी पण्डितों को नौकरी में स्थायी करने का दावा किया था। लेकिन, 'गवर्नमेंट स्कूल टीचर्स एसोसिएशन (माइग्रेंट)' ने बताया है कि कैसे इन शिक्षकों के खिलाफ उन्होंने अर्थात् केजरीवाल जी की दिल्ली सरकार ने दिल्ली

Government School Teachers Association (Migrant) Regd.

PRESS RELEASE

March 28, 2022

We strongly condemn the statement given by the Delhi CM that it was Delhi Government who regularised the services of Kashmiri Migrant Teachers – referred to as KMT here on.

The chain of events follows as below:

1. **June 6, 2010**: KMT approach Delhi High Court.
2. **May 18, 2015:** Single Bench delivers the judgement in favour of KMT by regularising their services.
3. The same judgement is challenged in the Double Bench of Hon'ble High Court by Delhi Govt. denying the regularisation of KMT.
4. **May 21, 2018**: Double Bench in its verdict, directed the Delhi Govt. To regularise the services of KMT.
5. Despite repeated assurances by the Delhi Govt. to regularise the services of KMT as per the directions of the Hon'ble High Court, they again challenged it in the Hon'ble Supreme Court of India.
6. **October 26, 2018**: Hon'ble Supreme Court dismisses the petition of Delhi Government and withstands the judgement delivered by the Hon'ble High Court dated 21st May, 2018.
7. **January 23, 2019:** Finally, Delhi Govt. regularises KMT, having no other option left.

The above events clearly indicate that the Delhi Government was never interested in regularising the services of KMT. In fact, the Delhi Government opposed the regularisation till the very end.

Dilip Bhan
Co-ordinator
Government School Teachers Association (Migrant) Regd.

उच्च-न्यायालय और सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ी कि इन प्रवासी अध्यापकों को स्थायी न किया जाय । प्रवासी शिक्षक संघ ने उनके बयान को झूठा बताया। और बाकायदा तथ्यों को प्रस्तुत किया है।

१८ मई २०१५ को दिल्ली हाईकोर्ट ने इन अध्यापकों की सेवायें नियमित कीं। परन्तु दिल्ली सरकार इस निर्णय के विरुद्ध डबल बेंच में गयी। २१ मई २०१८ को डबल बेंच में भी शिक्षकों के पक्ष में निर्णय आया, पर काश्मीरी पण्डितों के हितैषी होने का ढोल पीटने वाली केजरीवाल जी की सरकार ने उस निर्णय की अनुपालना करने के बजाय निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील की।

२६ अक्टूबर २०१८ को उच्चतम न्यायलय ने दिल्ली सरकार की याचिका खारिज की, तब जाकर मजबूरी में अन्य कोई विकल्प न बचने पर दिल्ली सरकार ने इन शिक्षकों को २३ जन २०२१ को नियमित किया।

तो यह है केजरीवाल जी की सच्चाई और नैतिकता जो वे बिना झिझके, बिना हिचके ऐसे बोलते हैं कि उनके सामने अच्छे-अच्छे असत्यवादी शर्मा जाये। आप इण्टरनेट पर जाइए एक से एक उदाहरण मिल जायेंगे पर हम यहाँ उनकी चर्चा करने नहीं बैठे हैं, हाँ उनका एक वक्तव्य मैं कहीं पढ़ रहा था तब आश्चर्य सागर में गोते लगाने लगा। बस उसका उल्लेख कर दूँ। उन्होंने कहा था, 'गीता में लिखा है कि एक सच्चा हिन्दू बहादुर होता है वो कभी मैदान छोड़कर भागता नहीं।' यह जिस भी सन्दर्भ में कहा हो परन्तु 'गीता में हिन्दू शब्द' यह तो कल्पना से परे की चीज है पर केजरी जी के लिए सब सम्भव है।

द काश्मीर फाइल्स के समर्थन करने की बजह से भाजपा पर उन्होंने क्या क्या तंज किये और प्रधान मंत्री जी को तो विवेक अग्निहोत्री जी के चरणों में गिर जाने की बात कहने में भी संकोच नहीं किया पर वे ये शायद भूल गए कि जुलाई २०१५ में उन्होंने 'मदारी' फिल्म लोगों को देखने की सलाह देते हुए इरफान खान के लिए 'छा गए' जैसे शब्दों का प्रयोग किया था।

भारतीय परम्परा अंध समर्थन की नहीं है। जिन लोगों को चुनकर विधान सभा में भेजा जाता है उनसे आशा की जाती है कि वे सत्य को सत्य कहने का साहस रखेंगे। मनु ने कहा है कि सभा में अगर जाए तो सत्य बोले। अगर आज के इन जन प्रतिनिधियों में इतना साहस नहीं है तो फूहड़ हँसी में साथ देना तो जरूरी नहीं था आखिर वे राजा के दरबारी नहीं बल्कि भारतीय जनमानस के निर्वाचित प्रतिनिधि हैं।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

-संवाद कार्यक्रम-

परोपकारिणी सभा के द्वारा महर्षि दयानन्द की जन्मतिथि संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम पक्ष डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी द्वारा महर्षि दयानन्द की जन्मतिथि फाल्गुन कृष्ण १० (उत्तर भारत) माघ कृष्ण १० (दक्षिण भारत) १८८१ विक्रम संवत् तदनुसार १२ फरवरी १८२५ ईस्वी शनिवार को हुआ, यह पक्ष रखा। द्वितीय पक्ष- श्री आदित्यमुनि वानप्रस्थ जी ने महर्षि की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ल १ संवत् १८६१ (गुजराती) तदनुसार २० सितम्बर १८२५ ईस्वी है, यह पक्ष रखा। ३० मार्च को प्रातः ७.३० बजे प्रथम सत्र में संवाद संचालक मण्डल के निर्देशानुसार दोनों ने ३०-३० मिनट अपना-अपना पक्ष रखा व शेष समय में परस्पर प्रश्नोत्तर भी हुए। पुनः दोपहर बाद ३.३० बजे दूसरे सत्र में दोनों द्वारा परस्पर प्रश्नोत्तर किया गया। यह संवाद कार्यक्रम बहुत ही शान्तिपूर्ण व सौहार्दपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. वेदपाल जी संरक्षक व श्री सज्जन सिंह कोठारी उपप्रधान परोपकारिणी सभा के द्वारा किया गया। मंत्री मुनि सत्यजित् जी संयोजक थे। यह केवल संवाद कार्यक्रम था। इसमें किसी एक पक्ष की हार या जीत की बात नहीं हुई। इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के बड़े विद्वान्, संन्यासी, आचार्य गण व सुधी श्रोतागण उपस्थित थे। जिनमें स्वामी आर्यवेश जी, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, श्री ओम्मुनि-सभा सदस्य, आचार्य दार्शनेय लोकेश, डॉ. अभिमन्यु आचार्य-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, श्री अशोक आर्य, उदयपुर-सत्यार्थ प्रकाश न्यास, श्री अरुण वीर, ब्र. राजेन्द्र, श्री भवदेश शास्त्री, श्री सुधीर आदि श्रोतागण उपस्थित थे।

- आचार्य ज्ञानचन्द्र, ऋषि उद्यान, अजमेर

बहानेबाजी का युग है यह

प्रो. शामलाल कौशल

बेशक आज कलियुग है जहाँ दया, धर्म, शर्म, लिहाज, सच्चाई, ईमानदारी, कठिन परिश्रम, नैतिकता, कर्तव्यपरायणता आदि पर चलने वाले को दकियानूसी तथा पुराने विचारों वाला कहकर दुतकारा तथा फटकारा जाता है, लेकिन इससे भी बड़ा कटु सत्य यह है कि हमारा आज का बहानेबाजी का भी कमाल का युग है जहाँ या तो कुछ करते ही नहीं या फिर बहुत कम करते हैं लेकिन उसकी भी प्रशंसा/शाबासी हद से ज्यादा लेना चाहते हैं। मुलतानी भाषा में एक कहावत है 'मन हरामी, ते हज्जतां ढेर' अगर हम किसी काम को न करना चाहें तो उसके लिए हम हजारों बहाने ढूँढ़ लेते हैं। असल में किसी काम को करने या न करने की बात हमारे मन की मर्जी पर निर्भर करती है। अगर किसी काम को ना करना हो तो उसके विद्ध तर्कों की भी हमारे पास कमी नहीं होती। कई बार तो किसी काम को करने या ना करने का हमें पता ही नहीं होता, उससे बचने के लिए हम बहाने ढूँढ़ते रहते हैं। बहानेबाजी के लिए झूठ, पाखण्ड, फरेब, छल, दूसरे को गलत साबित करना, पैंतरेबाजी वाक्पटुता आदि में माहिर होना जरूरी है। बचपन में स्कूल जाने से बचने के लिए हम कभी पेट दर्द, कभी सिर तो कभी कान दर्द, उल्टियाँ या फिर पेट में गड़बड़ी होने के बहाने लगाते रहे हैं। ऐसा नहीं कि बहानेबाजी हमारे वर्तमान युग की ही देन है। यह तो युगों युगान्तरों से हमारे साथ रही है। साहित्य में तो इसका प्रभाव बहुत देखने को मिलता है। अनपढ़, बेकार, गंवार तथा बेवकूफ कालिदास को चालाक लेकिन विद्वान् पंडितों ने, विदुषी महारानी ने कितनी मेहनत तथा समझदारी से कालिदास को पढ़ा-लिखाकर इतना बड़ा विद्वान् बना दिया, जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती। बहानेबाजी की प्रचलित प्रथा को 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' या फिर 'ना नौ मन तेल होगा और ना राधा नाचेगी' को लेकर ही तो कहा जाता है। बात दिल्ली की है। और चाँदनी चौक इलाके की है। एक आदमी को किसी को रुपये देने थे। बार-बार माँगने पर भी वह पैसे नहीं लौटा रहा था। एक दिन लेनदार ने देनदार पर दबाव बनाते हुये कहा, 'आज मैं तुम्हारे से अपने पैसे लेकर ही जाऊँगा', ऐसे में देनदार ने कहा, 'चलो, मैं तुम्हें किसी से लेकर देता हूँ। देनदार लेनदार को ले सुबह से शाम तक कभी खारी बावली, कभी पतासे वाली गली, कभी नई सड़क तो कभी कही घुमाता रहा। आखिर एक बन्द दुकान दिखाकर और माथा पीटते हुऐ लेनदार को कहा, 'इसी दुकान वाले से ही माँगकर मैंने अपना कर्ज चुकाना था और यही बन्द है। फूट गई किस्मत। अब तो बात कल परसों पर जा पड़ी है।' अब इससे बढ़कर और क्या बहानेबाजी होगी। लोग भी न जाने कैसे-कैसे बहाने बनाते हैं। लोग बहाने बनाने में एक्सपर्ट होते हैं। मौके के मुताबिक ऐसा बहाना बनाकर दूसरे को बेवकूफ बनाते हैं कि दूसरा हक्का-बक्का रह जाता है। आप हर रोज ऐसे भिखारियों को देखते होंगे जो नकली जख्मों पर पटिट्याँ बाँधकर, अपने अन्धे, लंगड़े-लूले तथा बहरे होने के सर्टिफिकेट को दिखाकर भीख माँग रहे होते हैं। कुछ अपने बेटे के दाहसंस्कार के लिये तो कुछ अपनी बेटी के विवाह के खर्चे के लिए भीख माँगते देखे जा सकते हैं। ये लोग कठिन परिश्रम करके कमाने वाले श्रमिकों के मुकाबले में भी ज्यादा भीख बटोरते हैं, शाम को विलायती शराब के जाम का मजा लेते हैं तथा अपने बच्चों को फर्स्टकलास स्कूलों में पढ़ाते हैं। कोई-कोई भिखारी तो इनकम टेक्स भी देता है, है ना कमाल

की बहानेबाजी से पैसा कमाने का यह अनूठा ढंग। एक अफसर अपने अधीनस्थ अधिकारी को बहानेबाजी के गुर सिखा रहा था। अगर आपने अपनी बीवी के साथ फिल्म का मैटिनी शो देखना हो तो छुट्टी लेने के लिए कभी भी साफ साफ ऐसा मत लिखो। बल्कि लिखो कि बीवी की तबियत खराब है, उसे डाक्टर के पास दिखाने के लिए ले जाना है। बेशक फिर उसे चाहे मैटिनी शो पर ले जाओ या फिर पिकनिक का आनन्द उठाओ। अगर कभी दफ्तर से छुट्टी होने पर दोस्तों के साथ गपशप लगाने, ताश खेलने की इच्छा हो तो टेलिफोन पर बीवी को सूचना दे दो कि आज दफ्तर में जरूरी मीटिंग है या फिर ओवरटाईम करने की वजह से देरी हो जायेगी। हाँ, घर जाते समय बीवी की कोई मनपसन्द चीज ले जाना मत भूलें। बहानेबाजी को लेकर हमारे राजनेता तो एक से बढ़कर एक गुरु घंटाल हैं।

चुनावों से पहले वे किसी को भाई, किसी को दोस्त, किसी को माँ तो किसी को बाप कहकर सम्बोधित करते हैं। लेकिन चुनाव जीतने के बाद जब लोग उनके पास कोई काम कराने जाते हैं तो नेता जी जरूरी मीटिंग में व्यस्त हैं, तबीयत ठीक नहीं हैं, डाक्टर ने रेस्ट बताया है, बाहर गये हैं, पता नहीं कब आयेंगे आदि बहानों से उन्हीं मतदाताओं को टर्का दिया जाता है जिनके सामने उन्होंने कुछ दिन पहले दण्डवत प्रणाम करते हुये नाक रगड़ा था। पत्नियाँ अपने पतियों को मुट्ठी में बन्द रखने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाती हैं। जो जितनी बड़ी बहानेबाज होगी उतनी ही ज्यादा सफल गृहिणी होगी। घर का सारा काम पति से करायेगी, किट्टी पार्टी में जायेगी और पलंग पर बैठकर ठाठ से टीवी देखेगी या मोबाईल पर अपने माँ-बाप या सहेलियों से गप्पें हांकेगी। जो पत्नियाँ अपने बच्चों की देखभाल करने को मुसीबत समझती हैं, वे कोई न कोई बहाने लगाकर घर में बच्चों के लिए आया लगवाती हैं, होमवर्क कराने के लिए ट्यूशन रखवाती हैं या फिर बच्चों को किसी दूर के स्कूल तथा हॉस्टल में भेज देती हैं। लेकिन बहानेबाज को सम्भल कर चलना चाहिए। काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। रंगे हाथों पकड़े जाने पर मुसीबत भी खड़ी हो सकती है, ४२० का केस भी बन सकता है, जूते भी पड़ सकते हैं, उम्र भर का विश्वास भी खत्म हो सकता है। लेकिन एक चतुर, स्याना तथा सफल बहानेबाज, हर बार नये-नये बहाने इस्तेमाल करता है और यह भी याद रखता है कि अपना उल्लू सीधा करने के लिए कब, कहाँ तथा किसके आगे कौन सा बहाना लगाया था। इसलिए जब तक बहानेबाजी की गाड़ी चल सकती है, कौन ना चलाना चाहेगा?

- मकान नं. ९७५ बी/२०
ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

भारतीय सनातन संस्कृति के बारे में जो प्रारम्भ से ही यहाँ चित्र द्वारा समझाया गया है वह काफी आश्चर्यचकित करता है। इतनी उन्नत संस्कृति का सचित्र विवरण सुनकर हृदय गर्व से भर गया। सादर नमन है इस स्थान को। इस तरह सुरक्षित करने वालों को। बहुत-बहुत हार्दिक आभार, बहुत-बहुत धन्यवाद।

- सुमित धाबाई

आज इस पुण्य स्थान के दर्शन करके भारतीय संस्कृति से आत्मसात हुआ। बहुत ही सुन्दर चित्रण के द्वारा प्रस्तुति की गई है। पूर्णरूप से समर्पित प्रबन्धन एवं कर्मचारीगण अत्यन्त ही मृदु स्वभाव द्वारा आगन्तुकों का स्वागत करते हैं। मन प्रसन्न हुआ।

- प्रमोद गोयल, दिल्ली

मैं राजेन्द्र कुमार शर्मा ग्राम पोस्ट बरखेड़ा जिला अलवर अपने पुत्र एवं पुत्रवधू (उदयपुर में सेवारत) से मिलने आया। यहाँ नवलखा महल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित प्रदर्शनी, चित्र, लेख आदि देखकर और सेवाभाव से गाइड महोदय द्वारा विभिन्न पहलुओं पर अति सुन्दर तरीके से महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक आदि पहलुओं पर जो जानकारी दी गई वह बहुत ही प्रशंसनीय है। उनका सम्बोधन, व्यवहार एवं ज्ञान आदि विशेष रूप से प्रशंसा करने योग्य है। मैं नवलखा महल और स्टाफ आदि की उन्नति की दिल से कामना भी करता हूँ। ईश्वर सभी को प्रसन्न रखें।

- राजेन्द्र कुमार शर्मा, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक

सीताराम गुप्ता

जब मनुष्य की करुणा का विस्तार होता है तभी वो सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है

प्रसिद्ध कवि नरोत्तमदास की चर्चित रचना है सुदामाचरित। उसकी कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं।

देख सुदामा की दीन दसा, करुना करि कै करुनानिधि रोए,
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सौं पग धोए।

जब सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलने द्वारका पहुँचे तो उनकी विपन्नता व कृषकाय अवस्था देखकर कृष्ण जो स्वयं करुणा के सागर थे करुणा से भर उठे और रो दिए। उनके पैर पखारने के लिए परात में जो पानी लाया गया था उसे हाथ लगाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि कृष्ण की आँखों से इतने आँसू गिरे कि सुदामा के पैर धुल गए। यदि साहित्य की दृष्टि से देखें तो ये करुण रस का अनुपम उदाहरण है। करुण रस का स्थायीभाव शोक होता है अर्थात् मन में शोक के कारण करुण रस की उत्पत्ति होती है। हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय साहित्य इस प्रकार की रचनाओं से भरा हुआ है। करुणा मनुष्य के हृदय को किस प्रकार उदात्त बना देती है आदि कवि बाल्मीकि इसका प्रखर उदाहरण हैं। कहा जाता है कि एक बार बाल्मीकि ने देखा कि एक बहेलिए ने प्रेमरत क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया जिसे देखकर मादा ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगी। इस विलाप को सुनकर बाल्मीकि का हृदय रो पड़ा। वे अत्यन्त व्यथित व आहत हो उठे और अचानक उनके मुख से निकला-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः षाष्वतीः समाः,
यत्क्रोंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।

अरे बहेलिए तूने कामविमोहित मैथुनरत क्रौंच पक्षी को मारा है अतः तुझे कभी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी। इस घटना से बाल्मीकि का कवित्व जाग उठा। उन्होंने संसार की महानतम कृति रामायण की रचना की। इस सबका श्रेय उनके अन्दर उत्पन्न करुणा को ही जाता है। इसी सन्दर्भ में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की एक कविता भिक्षुक का स्मरण हो रहा है-

वह आता-
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी-भर दाने को-भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते ?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

क्या ये मात्र कुछ शब्द हैं? नहीं, ये केवल शब्द नहीं हैं। एक भिक्षुक व उसके बच्चों की दुर्दशा व पीड़ा को देखकर कवि के हृदय में उपजी करुणा का चित्रांकन हैं ये पंक्तियाँ। करुणा की इससे मार्मिक अभिव्यक्ति क्या होगी?

अब थोड़ा करुणा के अर्थ पर विचार करते हैं। जब हम दूसरों की पीड़ा को देखते हैं तो हमारे अन्दर भी पीड़ा का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। यह भाव हमें दूसरों की पीड़ा को दूर करने की प्रेरणा देता है। दूसरों के दुख को देखकर दुखी होना और उसको दूर करने के लिए उद्यत हो जाना ही वास्तविक करुणा है। यदि दूसरों की पीड़ा को देखकर हमारे अन्दर पीड़ा के भाव तो उत्पन्न होते हैं लेकिन तत्क्षण विलीन हो जाते हैं और हम उसके विषय में सोचते ही नहीं तो वो कैसी करुणा? जब हमारी संवेदना अथवा सहवेदना कुछ करने के लिए उद्यत करती है तभी हम करुण बन पाते हैं अन्यथा वह संवेदना अथवा सहवेदना दिखावा मात्र है।

अन्य क्षेत्रों की तरह करुणा के क्षेत्र में भी हमारे मानदण्ड हमारी सुविधानुसार अलग-अलग होते हैं। अपने निकटस्थ व्यक्तियों अथवा स्वजनों के लिए हममें करुणा का होना स्वाभाविक है लेकिन हम अपने नज़दीकी व्यक्तियों के लिए दुख में ही नहीं दुःख की कल्पना मात्र से भी द्रवित अथवा करुणाद्र हो उठते हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि दूसरों के वास्तविक दुःख और अपने स्वजनों के दुःख की कल्पना से दुःखी होना करुणा ही कहलाता है। जो भी हो आज समाज में करुणा नामक तत्त्व कम होता जा रहा है। हमारी करुणा दिखावा बनकर रह गई है। बेशक हम अपनों के लिए चिन्तित अथवा व्याकुल हो उठते हैं लेकिन समाज के लिए हमारी चिन्ता का स्तर निरन्तर कमज़ोर होता जा रहा है। किसी व्यक्ति को पीड़ा में देखकर हम उसकी मदद करने की बजाय चुपचाप खड़े तमाशा देखना अधिक उचित समझते हैं। हद तो तब हो जाती है जब हम किसी पीड़ित अथवा असहाय की मदद करने की बजाय उस घटना का वीडियो बनाना ज्यादा ज़रूरी समझते हैं।

पिछले दिनों दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में ओलावृष्टि हुई। कई स्थानों पर काफी बड़े-बड़े और काफी मात्रा में ओले गिरे। कई समाचार पत्रों ने लिखा कि दिल्ली में बर्फबारी अथवा दिल्ली शिमला बना। दिल्ली में शिमला का आनन्द। लोग भी धड़ाधड़ ओलावृष्टि के वीडियो बनाकर इधर से उधर भेजे रहे हैं। उनके आनन्द की सीमा नहीं। वास्तव में उन्हें ओलावृष्टि और बर्फबारी में अन्तर नहीं मालूम। ये दोनों अलग-अलग एवं परस्पर विरोधी स्थितियाँ हैं। बर्फबारी पर्वतीय जीवन और फसलों के लिए अनिवार्य है लेकिन ओलावृष्टि चाहे पहाड़ों पर हो अथवा मैदानी भागों में बर्बादी लाती है। अब ऐसे ज्ञानवान लोग करुणा को किस रूप में लेंगे कहना मुश्किल है।

एक पक्षी के वध और उसकी मादा के क्रन्दन पर बाल्मीकि अन्दर तक हिल जाते हैं। आज समाज में विभिन्न वर्गों पर हो रहे अत्याचार को देखकर हमारा कलेजा नहीं दहलता। देश में हर शहर और क़स्बे तक में और कुछ हो या न हो देह व्यापार की गलियाँ ज़रूर मिल जाएँगी। देश में हर रोज़ न जाने कितनी मासूम लड़कियों को यातनाएँ देकर इस धंधे में उतार दिया जाता है? ये हमारे लिए केवल समाचार होते हैं। पढ़ते हैं और समाचार पत्र उछालकर दूर फेंक देते हैं। उनके प्रति संवेदना कब उत्पन्न होगी? उनके प्रति कब करुणा के भाव जगेंगे? कब उनके अच्छे दिन आएँगे? और भी बहुत सी समस्याएँ हैं। बहुत सारी बातें हैं जिनके लिए अच्छे लोगों का मन करुणार्द्र हो जाना चाहिए।

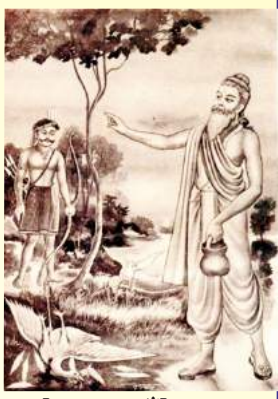

हम बड़ी आसानी से कह देते हैं कि ये उनके कर्मों का फल है। जैसे कर्म किए थे भोगने पड़ेंगे। हमें तो भगवानों की सेवा और पूजा-पाठ से फुर्सत नहीं। वैसे हम बड़े लोगों के लिए इनका होना भी ज़रूरी है। यदि भिखारी, ग़रीब अथवा पीड़ित नहीं होंगे तो हम किसके प्रति करुणार्द्र होंगे? हम किसे दान देंगे? हम कैसे उनकी मदद करते हुए वीडियो बनवाएँगे? करुणा क्या होती है इसे समझना है तो कैमरों की फौज के साथ दान करनेवालों की बजाय वास्तविक नायकों के जीवन को देखने का प्रयास करना अपेक्षित है। एक प्रेरक व अनुकरणीय व्यक्तित्व आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तेज़ बारिश हो रही थी। इस तेज़ बारिश में एक कुष्ट रोगी खुले में असहाय पड़ा हुआ बुरी तरह से कराह रहा था। उसकी मदद को कोई आगे नहीं आ रहा था। ऐसे में वहाँ से गुज़रने वाला एक व्यक्ति इस कुष्ट रोगी की दयनीय दशा देखकर अन्दर तक हिल गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वो बस यही सोच रहा था कि इस कुष्ठ रोगी की जगह अगर वो होता तो? इस घटना ने उसे इतना प्रभावित किया कि उसने उसी क्षण से जीवन भर कुष्ट रोगियों की सेवा करने का व्रत ले लिया। उसने उस कुष्ठ रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने कुष्ठ रोगियों की सेवा और चिकित्सा करने का व्रत तो ले लिया लेकिन वो खुद नहीं जानता था कि कुष्ठ रोग कैसे होता है और इसका उपचार कैसे किया जाता है? उस दिन के बाद से वो कुष्ठ रोग और उसके उपचार के अध्ययन में जुट गया। हमारे समाज में कुष्ट रोगियों को उपचार के दौरान अथवा बाद में भी आसानी से स्वीकार नहीं

किया जाता अतः उनका पुनर्वास भी ज़रूरी था अतः उसने महाराष्ट्र के चन्द्रपुर ज़िले के घने जंगलों में आनन्दवन नामक एक आश्रम की स्थापना की ताकि कुष्ठ रोगियों का उपचार ही

नहीं उनका पुनर्वास भी किया जा सके।

वो चाहता था कि कुष्ठ रोग का शीघ्र ही कोई अच्छा सा उपचार मिल जाए। इसके लिए वो लगातार प्रयोग करता रहा। एक बार तो उसने कुष्ठ रोग के बैक्टीरिया को चिकित्सीय प्रयोग के लिए स्वयं अपने शरीर में ही प्रविष्ट करा लिया ताकि कुष्ठ रोग पर उचित शोध कार्य करके शीघ्र इसके उपचार में सफलता प्राप्त कर सके। कुष्ठ रोगियों के इस हमदर्द व मानवता के महान् सेवक का नाम था मुरलीधर देवीदास आमटे जिन्हें अधिकांश लोग बाबा आमटे के नाम से जानते हैं। गाँधीजी जिन्होंने स्वयं कुष्ठ रागियों के उपचार व पुनर्वास के लिए बहुत काम किया ने कुष्ठ रोग के क्षेत्र में बाबा आमटे के अथक प्रयासों के लिए उन्हें 'अभय साधक' कह कर पुकारा। उनका समस्त परिवार आज भी उनके इस महान् कार्य के लिए निःस्वार्थ भाव से सेवा में रत् है। सचमुच करुणा से ओतप्रोत व्यक्ति ही ऐसा कार्य कर सकता है।

बाबा आमटे का महत्त्व मात्र इसलिए नहीं है कि उन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास में लगा दिया अपितु इसलिए अधिक है कि इसके लिए वो अपने शरीर के साथ भयंकर प्रयोग करने व अपने प्राणों को संकट में डालने से भी नहीं हिचकिचाए। ऐसे बहुत से उदाहरण हमारे सामने हैं। सूची बहुत लम्बी है लेकिन करुणा के बिना उदात्त भाव और महान् कार्य सम्भव ही नहीं। इसी भावना के अन्तर्गत लोग रक्तदान, दृष्टिदान अथवा देहदान करते हैं। करुणा मनुष्य को उदात्त बना देती है। निःसंदेह हम सबमें अपने स्वजनों के प्रति करुणा की कमी नहीं लेकिन इसमें विस्तार अपेक्षित है। जब हम करुणा के संकुचित भाव या क्षेत्र से ऊपर उठ जाते हैं अथवा हमारी करुणा असीमित होकर विस्तार पा जाती है तभी हम सही अर्थों में मनुष्य बन पाते हैं।

– ए.डी.१०६-सी, पीतम पुरा
दिल्ली-११००३४,
चलभाष- ९५५५६२२३२३

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

मध्यकालीन इतिहास का वज्र आलेख प्रताप संस्कृति, स्वतंत्रता एवं मानवमूल्य के तात्त्विक अणु के रूप में मिट्टी के कण-कण में व्याप्त है। ज्ञान एवं आचरण के एकत्व की सबलता, साध्य एवं साधन की पवित्रता प्रताप को 'युगन्धर' बना देती है। जहाँ मध्यकालीन सभी प्रमुख व्यक्तित्व अन्तर्विरोध के शिकार नजर आते हैं वहीं प्रताप इसका अपवाद है। प्रताप के व्यक्तित्व से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न साकार किया जा सकता है। प्रताप से यह प्रेरणा सहज ही मिल जाती है कि व्यक्ति को हमेशा एक '१' बनने के लिये समुद्यत रहना चाहिये पीछे लगने वाले शून्य की परवाह किये बिना। अकेले होने और लोगों के समझने या न समझने की फिक्र के बिना। लोककल्याण अथवा श्रेय-पथ का चयन ही मानव को असाधारण बनाता है। काल की छाती पर पैर रखकर अपने पदचिह्न छोड़ना समर्पित

पराक्रम से ही सम्भव है। मध्यकालीन विसंगतियों को तार-तार कर अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति की अमिट छाप को राष्ट्रीय स्मृति के रूप में स्थापित कर पाना ही तो प्रताप का 'युगन्धर' होना है।

आज हम वक्त के ऐसे मोड़ पर हैं जहाँ भारतीय राष्ट्र-समाज को अपनी बहुआयामी अस्मिता के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु द्राविड़ प्राणायाम करना पड़ रहा है। जीवन शैली के नये-नये आयामों की तलाश बदस्तूर जारी है।

शक्तिशाली सम्राट अकबर की शत्रुता प्रताप को विरासत में मिली थी और अकबर के लिए भी अपने विशाल साम्राज्य के बीच मेवाड़ आँख की किरकिरी बना हुआ था। अकबर द्वारा १५६७ ई. में किये गये चित्तौड़ आक्रमण के कारण चित्तौड़ में मेवाड़ की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। प्रताप इस बात को अच्छी तरह जानता था कि अधीनता स्वीकार न करने का अर्थ ही लम्बा व कठोर संघर्ष है- इस कारण युद्ध की तैयारी के अतिरिक्त महाराणा प्रताप के स्वाभिमानी चरित्र के लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं था। इतिहासकारों द्वारा इस स्थिति में दो विकल्पों की चर्चा करना प्रताप के व्यक्तिव के प्रति नासमझी के सिवाय कुछ नहीं है।

हल्दीघाटी के युद्ध के स्थान व स्वरुप को लेकर विरासत से प्राप्त विभिन्न मतों के विश्लेषण के आधार पर एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचना कि हल्दीघाटी का युद्ध दो चरणों में हुआ था। प्रथम चरण का युद्ध हल्दीघाटी के मुहाने पर तथा द्वितीय चरण का युद्ध खमनोर से आगे रक्तताल नामक स्थान पर हुआ था। अतः इसे हल्दीघाटी का युद्ध कहना ही तथ्यमूलक है। अभी तक इस युद्ध से प्रताप के पलायन को स्वीकार किया जाता रहा है परन्तु प्रिय अश्व चेतक के घायल होने, सामन्तों के अनुरोध एवं छापामार युद्ध नीति की योजना के अन्तर्गत प्रताप सुरक्षित स्थान की ओर गया था। साथ ही पहले चरण के युद्ध में मुगल सेना हारकर भागने लगी थी जो बनास को पार कर गई थी। अतः प्रताप की हार एवं उसका पलायन कैसे मान

लिया जाय?

उद्देश्यगत, क्रियागत एवं परिदृश्यगत आधार पर युद्ध की जय पराजय का निर्णय किया गया एवं पाया कि इन तीनों ही आधारों पर प्रताप की विजय ही मालूम होती है। अतः ठोस निष्कर्ष रूप में स्वीकार किया गया कि प्रताप विजेता था पलायनवादी नहीं। हल्दीघाटी की विजय एवं हल्दीघाटी के युद्ध के बाद की स्थितियों का विश्लेषण करते हुए प्रताप द्वारा दिवेर की शानदार जीत के काल को सतत् संघर्ष की साधना एवं विजय के दशक रुप में स्थापना की गई। बाद के १५८६ ई. से चावण्डकालीन शान्ति के काल को सिद्धि का शिखर काल एवं पूर्णता के युग के रुप में प्रतिस्थापना विश्लेषण का मुख्य परिणाम रहा। प्रताप ने चावण्ड को चित्रकला का केन्द्र बनाकर नई चित्रशैली का प्रचलन कराया। मेवाड़ी चित्रशैली का प्रारम्भिक रुप यहीं प्रादुर्भूत हुआ था। चावण्ड से राजधानी उठ जाने के बाद भी १८वीं सदी तक चावण्ड में कला व साहित्य का सृजन होता रहा।

भारतीय इतिहास में प्रताप के स्थान एवं मूल्यांकन को लेकर काफी मतभेद दिखाई पड़ता है। इस मतभेद का कारण वस्तुनिष्ठता नहीं होकर इतिहासकारों की वैचारिक सापेक्षता है। इतिहास लेखन जब सामान्य एवं एकांगी बन जाता है तब इस तरह की निरर्थक बहस का जन्म होता है। जहाँ राजपूताना के श्रेष्ठ आदर्शों से प्रभावित होकर एक अंग्रेज अधिकारी कर्नल टॉड राजस्थान का प्रथम इतिहास लेखक बन जाता है वहीं इन श्रेष्ठ आदर्शों की अवहेलना एवं इन्हें अमूल्यवान सिद्ध करने में ही भारतीय इतिहासकार अपने आप को क्यों गौरवान्वित महसूस करते हैं? 'हल्दीघाटी एवं दिवेर' को जहाँ विदेशी लेखक पवित्रता एवं गौरव का प्रतीक मानकर थर्मोपल्ली एवं मेराथन के नाम से संज्ञायित करता है वहीं कई देशी इतिहासकार यथार्थबोध एवं आत्मगौरव से च्युत नजर आते हैं। हालांकि सभी इतिहासकार इस मत से तो सहमत लगते हैं कि प्रताप दृढ़-प्रतिज्ञ, अदम्य स्वाभिमानी, स्वतंत्रता प्रेमी, त्यागी, बलिदानी एवं वीर योद्धा था परन्तु उसके ऐतिहासिक महत्व, उसके सिद्धान्त एवं उसकी नीतियों के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण अपनाते हैं। यथा :

१. मेवाड़ के शासक बनने के बाद प्रताप के सामने अकबर के प्रति दो विकल्पों की अवधारणा।
२. १५७२ से १५७६ ई. तक अकबर की मेवाड़ के प्रति नीति को यह मानना कि वह प्रताप को सोचने का समय दे रहा था।
३. मारवाड़ के चन्द्रसेन को प्रताप के अग्रगामी एवं पथ प्रदर्शक के रुप में दर्शाना।
४. हल्दीघाटी के युद्ध के स्थान व स्वरुप को लेकर विभिन्न मत। इस युद्ध को खमनोर का युद्ध मानना, प्रताप को घायल बताना एवं युद्ध क्षेत्र से उसके पलायन को दिखाना।
५. प्रताप में राजनीतिक दूरदर्शिता एवं कूटनीतिज्ञता का अभाव।
६. प्रताप हठधर्मी था एवं उसमें व्यापक दृष्टिकोण का अभाव था।
७. मेवाड़ को अस्थिर हालातों से गुजरना पड़ा जिसका जिम्मेदार प्रताप था। वह भगोड़े की तरह पहाड़ों की खाक छानता रहा जिससे मेवाड़ ने प्रशासनिक एवं आर्थिक दुर्दशा को प्राप्त किया।
८. प्रताप का उद्देश्य भी संकीर्ण था क्योंकि वह कुल गौरव तक ही सीमित था।
९. सांगा की तरह 'हिन्दुआ सूरज' के रुप में उसने अकबर के विराट, व्यापक एवं धर्म निरपेक्ष उद्देश्यों में बाधा डाली और राष्ट्रीय एकता को नहीं पहचाना।
१०. शक्तिसिंह को हल्दीघाटी के युद्ध में अनुपस्थित मानना एवं उसके द्वारा की गई प्रताप की सहायता को कल्पना ठहराया।
११. संघर्षकाल में कुछ पहाड़ी भू-भाग पर ही प्रताप का अधिकार मानना। समतल मैदानी भू-भाग पर प्रताप के प्रभावी नियंत्रण को नकारना।
१२. हल्दीघाटी युद्ध को परिणाम की दृष्टि से अनिर्णायक युद्ध मानना एवं अकबर का पलड़ा भारी बताकर प्रताप को हारा हुआ मानना।
१३. प्रताप के गुणों से प्रभावित होकर उसके संघर्ष के सम्बन्ध में लिखे इतिहास को गंभीर इतिहास नहीं मानना।
१४. प्रताप के आदर्शों को काल्पनिक एवं भावुकतापूर्ण विचारों से ग्रस्त मानना। साथ ही मुगल संघ में सम्मिलित होने वाले राजपूतों को विवेकी एवं दूरदर्शी मानना।
१५. अकबर को महान् और उदारचेता सम्राट मानते हुए प्रताप को देश के लिए हानिकारक मानना।
१६. मेवाड़ के पिछड़ेपन हेतु प्रताप को जिम्मेदार ठहराना एवं उसकी नीतियों को विकास में बाधक मानना।
१७. प्रताप को छोटे जागीरदार के रुप में सीमित करना।
१८. प्रताप में राजनीतिक व्यापकता एवं अन्तर्दृष्टि का अभाव।

इन विभिन्न धारणाओं के साथ ही कुछ इतिहासकार विरोधाभासी विचारों से ग्रसित दिखाई पड़ते हैं। एक तरफ वे प्रताप को राष्ट्रीय एकता में बाधक मानते हैं तो दूसरी तरफ प्रताप को विदेशियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाला आदर्श एवं आशा का स्त्रोत मानते हैं और भारतीय गौरव का प्रतीक भी। इस तरह एक ही लेखक की परस्पर विरोधी धारणाएँ उसके द्वन्द्व को प्रकट कर देती है।

उपर्युक्त धारणाओं को तथ्यहीन एवं भ्रममूलक पाया गया। फारसी स्त्रोतों एवं आधुनिक इतिहासकारों के प्रताप सम्बन्धित निन्दात्मक वर्णन के साथ उनमें छिपाए गए अलिखित तथ्यों को भी पढ़ने का प्रयास किया गया है। जिसके निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

(१) प्रताप के शासक बनने पर अकबर के संदर्भ में जिन दो विकल्पों की चर्चा बार-बार की गई वे इस प्रकार हैं-

(अ) अकबर की अधीनता अथवा (ब) कठोर मुगल प्रतिरोध

प्रताप के व्यक्तित्व को नहीं समझ पाने के कारण इतिहासकारों द्वारा इन्हीं विकल्पों को तराशा गया जबकि प्रताप बाल्यकाल से ही मुगल प्रतिरोध की विरासत एवं स्वतंत्रता की भावना अंगीकार कर चुका था।

(२) अकबर द्वारा प्रारम्भिक चार वर्षों तक प्रताप को सोचने का समय देना उपहासपूर्ण लगता है। वस्तुतः अकबर इन वर्षों में रणथम्भोर, बंगाल व बिहार के अभियान में व्यस्त रहा। साथ ही नागौर दरबार के आयोजन द्वारा राव चन्द्रसेन, बीकानेर के रायसिंह एवं जैसलमेर के शासन की अधीनता का विज्ञापन कर प्रताप पर दबाव बनाता रहा। इन्हीं चार वर्षों में शिष्ट मण्डलों को दबी जुबान से युद्ध की भाषा समझाने हेतु मेवाड़ भेजने के प्रयत्न को कैसे माना जा सकता है कि अकबर मेवाड़ के प्रति उदासीन रहा अथवा प्रताप को सोचने का मौका देता रहा? सच यह है कि अकबर मेवाड़ के स्वतंत्र अस्तित्व को सहन नहीं कर पा रहा था परन्तु वह सामरिक दृष्टि से भी तुरन्त आक्रमण की स्थिति में नहीं था। चित्तौड़ के युद्ध में वह मेवाड़ी पौरुष को देख चुका था। अतः फूंक-फूंक कर कदम रख रहा था। वह शान्ति का विज्ञापन कर भारतीय समाज में अपनी पैठ जमाना चाहता था ताकि उसका युद्ध का साम्राज्यवादी प्रयत्न उसकी मजबूरी लगे, लिप्सा नहीं एवं भारत का जनमानस उसे अतिक्रमणकारी न मानकर वैधानिक शासक मान ले।

(३) प्रताप का संघर्ष उसकी आंतरिक स्वातंत्र्यप्रियता एवं सांस्कृतिक मूल्यों व आदर्शों से संचालित था जबकि चन्द्रसेन का संघर्ष हालातों की उपज था। नागौर दरबार में अकबर द्वारा महत्व न देने, उसे उसके मारवाड़ राज्य से च्युत् करने के परिणाम की निराशा के रुप में था, अतः चन्द्रसेन प्रताप का अग्रगामी एवं पथ प्रदर्शक कैसे हो सकता है ?

(४) हल्दीघाटी का युद्ध दो चरणों में हुआ था। युद्ध का पहला चरण हल्दीघाटी के मुहाने पर प्रताप के आक्रमण के साथ शुरु होता है जिसमें मुगल सेना परास्त होकर बनास नदी तक भाग जाती है। द्वितीय चरण का युद्ध खमनोर से आगे रक्तताल नामक स्थान पर होता है जहाँ पर मेहतर खाँ ने अकबर के युद्ध मैदान में आने की झूठी सूचना देकर मुगल सेना को रोका था। प्रथम चरण का युद्ध हल्दीघाटी में ही होने से इसे खमनोर का युद्ध कहना उचित नहीं है। इस द्वितीय चरण के युद्ध में चेतक के घायल होने, सामन्तों के निवेदन एवं छापामार युद्ध नीति की योजना के अन्तर्गत प्रताप ने अपना स्थान परिवर्तन किया था। इसे पलायन के रुप में दर्शाना तथ्यों से परे है।

(५) प्रताप हठधर्मी शासक नहीं था। वह अकबर की कूटनीति को पहचानने वाला शासक था तभी तो उसने शक्ति संचय के काल में अकबर से सीधा मुकाबला न कर सुलह प्रयासों का कूटनीतिपूर्वक प्रत्युत्तर दिया। परिस्थितियों को ध्यान में रखकर युद्ध नीति में परिवर्तन करता रहा, हल्दीघाटी युद्ध के प्रथम चरण में सफलता के तत्काल बाद प्रताप द्वारा युद्ध योजना में परिवर्तन इसका प्रमाण है। आत्मरक्षात्मक नीति अपनाने के साथ शत्रु को परेशान करने हेतु भारतीय छापामार युद्ध नीति का भी सहारा लिया। अपने आप को शान्ति के पक्षधर के रूप में बताते हुए शक्ति संचय किया एवं अकबर विरोधी शक्तियों से लगातार सांठगांठ की। अकबर की हठधर्मिता स्पष्ट प्रकट हो जाती है कि वह उस शर्त को लेकर अड़ा रहा जो शर्त १६१५ ई. में उसके उत्तराधिकारी जहांगीर को भी छोड़नी पड़ी।

(६) मेवाड़ कभी भी इतने अस्थिर हालातों में नहीं रहा कि प्रशासनिक इकाइयाँ एवं आर्थिक तंत्र नष्ट से हो गये। अब तक अप्रकाशित कुछ ताम्रपत्रों के विश्लेषण से उसके प्रशासनिक तंत्र के कार्य करते रहने के प्रमाण मिलते हैं जो कि शोध विवरण में प्रस्तुत किये गये हैं। पहाड़ों में खाक छानना प्रताप की गुरिल्ला युद्ध नीति का स्वाभाविक यथार्थ था। युद्ध नीति के मूल चारित्रिक तत्वों को ध्यान में रखते हुए इस आरोप को तथ्यात्मक नहीं माना जा सकता है।

(७) वन-बिलाव की काल्पनिक घटना से प्रताप के परिवार के भूखे-मरने एवं अभावग्रस्त जीवन का अर्थ निकालना उचित प्रतीत नहीं होता। यह काल्पनिक स्थिति साहित्य की लक्षणा शक्ति का प्रयोग मात्र है। प्रताप के संघर्ष की उद्दामता को व्यापक बनाने एवं प्रताप को कष्ट सहिष्णु बताने के लिए किया गया प्रयास है। वैभव एवं विलास को त्याग कर सादगी अपनाने को अलग अर्थ दे दिये गये जबकि प्रताप ने उद्देश्य विमुखता न हो अतः ऐसे जीवन को आदर्श के रुप में अपनाया था, जिसकी लगातार युद्ध की परिस्थितियों में आवश्यकता भी थी। जन सामान्य को अपने उद्देश्य से जोड़े रखने के लिए भी यह सादगी आवश्यक थी ताकि यह मुगल प्रतिरोध जन-जन का संघर्ष

बन सके और कोई भी कुँवर, सेनानी अथवा सामन्त प्रमाद का शिकार न हो।

(८) प्रताप को मात्र कुल गौरव की रक्षा के दायरे में सीमित करना वस्तुनिष्ठता को झुठलाना या मोड़ना मात्र है। अध्येता की दृष्टि ही इसका निर्धारण कर सकती है। ऊपरी तौर पर देखने से ऐसा कहा जा सकता है। उसके संघर्ष में निहित आदर्श और व्यापक उद्देश्य, अवैधानिक शासक की निरंकुश सत्ता लोलुपता की प्रतिरोधी प्रचण्ड भावना एवं मेवाड़ की जनता एवं आसपास के पड़ोसी राज्यों से मिला समर्थन अलग ही तथ्य उजागर करता है जिसे इस शोध में उभारा गया है ताकि चली आ रही भ्रांति दूर हो सके। प्रताप यदि कुल गौरव तक ही सीमित होता तो वह कभी भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणीय जीवित किंवन्दन्ती नहीं बनता। कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अटक से कटक तक किंवा सात समन्दर पार वियतनाम के अस्तित्व रक्षक युद्ध में भी प्रेरणीय नहीं बनता। वियतनाम ने अमेरिका जैसी विश्वशक्ति से होमोचीन के नेतृत्व में संघर्ष किया। दीर्घावधि तक संघर्ष में जन समर्थन को साथ लेकर होमोचीन ने अन्ततः अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की। सफलता प्राप्ति के बाद उसने भाषण में कहा कि इस संघर्ष की प्रेरणा उसे प्रताप से प्राप्त हुई थी।

(९) हिन्दू धर्म का संकीर्ण अर्थ लेकर प्रताप को 'हिन्दुआ सूरज' तक ही सीमित करना प्राचीन हिन्दू धर्म के समग्र स्वरुप की अनदेखी करना है या नमक, मिर्च लगाकर प्रसिद्धि पाने हेतु कयास ही कहा जा सकता है। सर्वप्रथम हमें 'हिन्दू धर्म' को मूलभूत रूप से समझना पड़ेगा इसके लिए हकीम खां सूर को युद्ध में हरावल सौंपना, खानखाना के जनानखाने को सम्मानपूर्वक मुगल शिविर में भिजवाना एवं हल्दीघाटी युद्ध के पूर्व शिकार पर निकले अकबर के प्रतिनिधि मानसिंह पर आक्रमण नहीं करने के अर्थों में 'हिन्दू धर्म' को सही रुप में देखा जा सकता है।

'धर्म निरपेक्षता' शब्द आधुनिक अति बौद्धिकता का स्मारक मात्र है जो कि वर्तमान की विसंगतियों के कारण फल-फूल रहा है। 'पंथ-निरपेक्षता' शब्द फिर भी कुछ अर्थवान है। 'हिन्दू-धर्म' के उत्स से लेकर मध्यकालीन जीवन यात्रा तक किंवा आज तक धर्म निरपेक्षता उसी 'हिन्दू' शब्द में समाहित है जो कि अपनी 'समाहार शक्ति' के कारण मिटाने के कई प्रयासों के बाद भी अपनी हस्ती को बनाये हुए है। अकबर के लिए 'रामप्रसाद हाथी' तक के नाम का परिवर्तन 'पीर प्रसाद' के रुप में, चित्तौड़ एवं उदयपुर को जीतकर इनके नाम बदलना यथा उदयपुर का नाम 'मुहम्मदाबाद' रखना भी धर्म निरपेक्ष स्वरूप के अन्तर्गत आता है जबकि संस्कृति के प्रतिनिधि प्रताप का महान् आचरण भी धर्म की संकीर्णता के रुप में क्यों दिखाई पड़ता है? यह दुःखद आश्चर्य की बात है। तथाकथित धर्म निरपेक्षता जो कि विदेशी अकबर की राजनीतिक मजबूरी एवं भारतीय समाज से जुड़ने की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता मात्र थी। धर्म निरपेक्षता जहाँ अकबर के व्यक्तित्व में बाहर-बाहर ही थी वहाँ प्रताप की आत्मा में सर्वधर्म समभाव का गुण

विद्यमान था।

(१०) शक्तिसिंह के नाराज होकर मुगल दरबार में जाने की बात तो फारसी स्त्रोतों ने खूब उठाई है पर हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप की सहायता की बात पर चुप्पी एवं कतिपय इतिहास लेखकों द्वारा इस चुप्पी का अनर्थ अर्थ लेना विडम्बना ही कही जा सकती है। शक्तावतों की वंश जागीर से मिले राजकीय परवाने की प्रति लम्बे समय से चले आ रहे इस नियोजित मिथक का पर्दाफाश कर देती है। निश्चित ही शक्तिसिंह ने मुल्तानी सैनिकों को ढेर कर प्रताप एवं मेवाड़ के प्रति अपनी निष्ठा प्रमाणित की थी। इस शोध प्रबन्ध का यह एक महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी निष्कर्ष है।

(११) कुछ अप्रकाशित ताम्रपत्रों के विवेचन से मेवाड़ के महत्वपूर्ण पहाड़ी भाग के साथ-साथ वर्तमान भीलवाड़ा के मैदानी क्षेत्र पर भी प्रताप के प्रभावी नियंत्रण को स्वीकार किया है। धार्मिक क्षेत्र में देने वाले भू-दान अथवा उदक के रुप में दी गई जमीनें एवं हुतात्मा चेतक के लिए दिया गया हल्दीघाटी क्षेत्र में भू-दान इस पुरानी भ्रान्त धारणा को निर्मूल सिद्ध कर देता है कि प्रताप का अधिकार क्षेत्र सीमित एवं उस पर प्रभावी नियंत्रण नहीं था।

(१२) हल्दीघाटी के युद्ध को अनिर्णायक युद्ध के रूप में स्वीकार कर लिया गया है इस सहमति को ठीक नहीं पाया गया। उद्देश्यगत, क्रियागत एवं परिदृश्यगत आधार पर मंथन कर फारसी व अन्य मूल स्त्रोतों के तथ्यात्मक विश्लेषण के आधार पर हल्दीघाटी के युद्ध के विजेता के रुप में प्रताप स्थापित होता है।

(१३) राजनीतिक घटनाक्रम के इतिहास लेखन की लीक से हटकर अन्यान्य क्षेत्रों को भी इस अध्ययन में विषय बनाया गया है यथा- प्रताप अच्छे प्रबन्धन व्यूह रचनाकार के रुप में भी थे। सैन्य व्यूह रचनाकार के साथ-साथ अच्छे प्रबन्धक भी थे। उन्होंने उस युग में मानव संसाधन प्रबन्धन और संचार माध्यम का जितना खुलकर उपयोग किया वह अच्छे प्रबन्ध कौशल का परिचायक था। इसी कारण आज भी प्रतापकालीन पुरातात्विक स्थल सुरक्षित मिलते हैं। ये प्रताप के व्यक्तित्व एवं विचार दर्शन के परिचायक भी हैं। प्रताप का जन्म कुंभलगढ़, बचपन चित्तौड़, युवराज काल आरण्यक प्रदेश, प्रारम्भिक शासन काल गोगुन्दा, हल्दीघाटी, ढोलण, कमलनाथ, चावण्ड, आवरगढ़, मचींद, चावण्ड आदि स्थानों पर व्यतीत हुआ। कोल्यारी घायल सैनिकों की चिकित्सा व्यवस्था स्थल एवं जावरमाला रणमंत्रणा स्थल के रुप में रहे। ये स्थल स्थापत्य कला एवं चित्रकला की सादगी, जल प्रबन्धन एवं कृषि व्यवस्था आदि मूलभूत आवश्यकताओं को भी अपने कलेवर में समेटे हुए थे।

(१४) प्रताप एक कुशल सैनानी के साथ संवेदनशील प्रशासक भी थे। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी सृजनशीलता एवं सूझबूझ से प्रशासनिक

इकाई को एक नया स्वरुप प्रदान किया। निरंकुशता से काम न लेकर सहयोग लेने की नीति का अवलम्बन लिया। शासन संचालन तंत्र के निर्माण का आधार जन-जन का सहयोग रखा, यहाँ तक कि पहाड़ों में रहने वाली जनजातियों को भी विश्वास देकर प्रशिक्षित बना उसे प्रशासन का मुख्य आयाम बना लिया। समता, नीति एवं सद्भावना को अपनाकर, पूर्वाग्रह से दूर रहकर प्रताप ने समाज के हर वर्ग को अंगीकार किया। संघर्ष की सफलता हेतु उन्होंने जन-संगठन एवं जन-जागरण पर विशेष ध्यान रखा। अरावली प्रदेश के चप्पे-चप्पे में घूमकर जनता के मनोबल एवं नैतिक स्तर को उच्च बनाये रखा। प्रताप द्वारा सद्भाव व सहयोग की नीति अपनाने से मेवाड़ जन ही नहीं पड़ौसी शक्तियों के साथ भी उनके मधुर सम्बन्ध बने जो कि विदेशी आक्रान्ता के प्रतिरोध में सहायक भी बने। जिससे प्रताप कभी भी दीर्घावधि मुगल प्रतिरोधी संघर्ष में एकाकी नहीं रहा।

(१५) अकबर द्वारा 'राष्ट्रीय एकता' की बात कहकर अकबर के परिप्रेक्ष्य में तो राष्ट्र को स्वीकार किया गया परन्तु प्रताप के संदर्भ में राष्ट्र की संकल्पना को अभी तक स्वीकार नहीं किया गया और कहा गया कि मध्यकाल में 'राष्ट्र' की संकल्पना एवं चिन्तन बेमानी है। तो कुछ विद्वानों द्वारा फ्रांस की राज्य क्रान्ति के बाद ही राष्ट्र की अवधारणा का जन्म होना माना गया। अतः 'राष्ट्र' की संकल्पना मध्यकाल तो क्या भारतीय इतिहास के प्राचीनकाल से भी पूर्व की है जो कि संस्कृति के माध्यम से कालजयी बन सतत् अविरल रही, इसका प्रवाह अनुकूलताओं में कभी बाह्य एवं आन्तरिक दोनों स्तरों पर रहा तो कभी प्रतिकूलताओं में आन्तरिक रुप में जीवट के रुप में मूल्य संरक्षण की पहचान को लेकर सतत् संघर्षशील भी रहा। निश्चित रुप से प्रताप ही इस 'राष्ट्र तत्व' का पुजारी था तभी वह अकबर के बाजार में बिका नहीं। प्रताप राष्ट्र, भूमि, संस्कृति, त्याग, प्रेम, बलिदान, नैतिकता एवं सामाजिक समस्वरता का वह केन्द्रीय तत्व है जो हमेशा ही भारत में प्रासंगिक एवं वरेण्य रहा है। जितनी राष्ट्र एवं संस्कृति की भावना से अनुप्राणित रीति-नीति प्रताप की रही वैसी मध्यकालीन इतिहास में अन्य किसी की नहीं। राष्ट्र का स्वरूप एवं चिन्तन ही संघर्ष का आधारभूत प्रेरक होता है, प्रताप के सन्दर्भ में यह स्वीकार करना ही होगा।

(१६) निश्चित ही युद्धकालीन स्थितियों में जन-धन की हानि एक सामान्य प्रतिफलन एवं आवश्यक परिणाम है। हल्दीघाटी के दर्रे से निकल युद्ध के प्रथम चरण को जीतकर मैदानी भाग में मुगल सेना का सामना प्रताप की अति उत्साह में हुई भूल के रुप में देखी जा सकती है जिससे सबक प्रताप ने लिया था और आगामी रणनीति में प्रताप ने इसका विशेष ध्यान रखा।

(१७) साधन सम्पन्न अकबर के सामने प्रताप की उद्दाम कर्मशक्ति की अनदेखी कर प्रताप का मूल्यांकन करना ठीक प्रतीत नहीं होता है। प्रताप के उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह द्वारा १६१५ ई. में की गई सम्मानित सन्धि की छाया में प्रताप के संघर्ष को नकारना कहाँ तक उचित होगा? फिर तो सांगा का बाबर के विरुद्ध संघर्ष को नकारना कहाँ तक उचित होगा? यदि

सांगा मुगल आक्रान्ता बाबर को सहर्ष स्वीकार कर अधीनता अपना लेता तो मेवाड़ के भौतिक पिछड़ेपन के दूर होने की शुरुआत एक सदी पूर्व ही हो जाती अथवा भौतिक पिछड़ापन शुरु ही नहीं होता। साथ ही प्रताप के परवर्ती इतिहास में देखें तो पाते हैं कि भारत को एक सूत्र में बाँधने का श्रेय अंग्रेजों को देने वाले विद्वानों का भी अभाव नहीं है। इस आधार पर यह कहना कहाँ तक उचित होगा कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा गया स्वतंत्रता संग्राम देश के हित एवं एकता को बाधित करने का प्रयास था?

(१८) राजपूताना का आमेर राज्य ऐसा प्रथम राज्य रहा है जिसने मुगल सत्ता से मित्रता करके अपना तथाकथित भौतिक विकास किया था परन्तु मानसिंह के उत्तराधिकारी की ऐसी आर्थित स्थिति कैसे हो गई कि सैनिकों को वेतन देने के लिए भी राजकोष में धन नहीं बचा एवं मराठों की सैनिक सहायता के एवज में दिये जाने वाले धन के अभाव के कारण जयसिंह के उत्तराधिकारी ईश्वरसिंह (१७४३ ई.-१७५१ ई.) ने सांपों से कटवाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। अतः स्पष्ट है कि आमेर ने मुगल सत्ता के प्रति समर्पण रखकर भौतिक दृष्टि से क्या कुछ प्राप्त कर लिया और प्रताप ने संघर्ष करके मेवाड़ का क्या कुछ खो दिया। कालान्तर में राजपूताना के इन समर्पित शासकों का भी मुगल सत्ता से मोहभंग हो गया। सभी शासक एक एक करके मुगल विरोधी होते चले गये। आमेर एवं मारवाड़ के साथ मुगल संघर्ष इस बात का प्रमाण है। इस तरह आगे जाकर राजपूताना के सभी शासकों ने प्रताप की नीति का ही अनुसरण किया। जिससे सिद्ध हो जाता है कि प्रताप की मुगल प्रतिरोध की नीति कितनी दूरदृष्टि सम्पन्न एवं सार्थक थी।

(१९) दृष्टि की व्यापकता एवं राजनीतिक अर्न्तदृष्टि के लिए गद्दी पर बैठने के चार वर्षों तक प्रताप जिस प्रकार से अकबर के शिष्टमण्डलों से व्यवहार कर अपनी भावी युद्ध योजना हेतु समय का प्रबन्ध करता रहा यह उदाहरण पर्याप्त है। मुगल विरोधी मंच का निर्माण, हल्दीघाटी युद्ध में हकीम खां सूर को नेतृत्व, पठानों से मुगल विरोधी मित्रता एवं आदिवासी समुदाय का सक्रिय समर्थन प्राप्त करना दृष्टि की व्यापकता नहीं तो और क्या है? छापामार युद्ध नीति अपनाकर अकबर से दीर्घावधि संघर्ष करना प्रताप की अन्तर्दृष्टि के ही परिणाम थे। राजस्थान के परम्परागत ऐतिहासिक स्त्रोतों एवं साहित्य में प्रताप को महानायक के रुप में स्थान प्राप्त है। वस्तुतः विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक एवं विदेशी अकबर के विरुद्ध सफल संघर्ष करने के कारण प्रताप भारत की 'प्रधान तात्विक भावना' (Elemental Spirit) का प्रतीक है। यह भावना देश के परम्परागत गौरव की रक्षा करती है और इस गौरव पर आँच आने वाली हर बात के विरुद्ध संघर्ष करती है। अतः तात्विक भावना का प्रधान होने से इतिहास में प्रताप का स्थान शाश्वत हो जाता है। अधिकांश इतिहासकारों ने फारसी-तवारीखों को ही इतिहास का मानक माना एवं परम्परागत स्त्रोतों को भावुकता से ओतप्रोत अर्द्ध-ऐतिहासिक माना। साथ ही प्रताप के सतत् संघर्ष के पक्ष पर भी उनका ध्यान गया उसके गुणों, क्षमताओं, प्रशासनिक, सैन्य दक्षताओं एवं सृजनात्मक मौलिक प्रयोगों की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। अतः प्रताप का मूल्यांकन एकपक्षीय रहा।

प्रताप उन ऐतिहासिक अमर पात्रों में है जिन्हें काल की सीमित परिधि में बाँधा नहीं जा सकता। अपने व्यक्तित्व एवं नीतियों के गुणगत मूल्यांकन की दृष्टि से प्रताप सामाजिक चेतना के उस स्तर पर पहुँचे हैं जहाँ कोई विरला ही पहुँच पाता है। किसी प्रतिभावान महान् व्यक्ति के आविर्भाव का कारण जान पाना कठिन है क्योंकि वे साधारण के व्यक्तिक्रम ही होते हैं पर उनमें यह विशिष्टता होती है कि वे मानव जाति के अवचेतन या अर्द्ध-चेतन मन को अनुप्रेरित करने वाले आवेगों व भावनाओं को स्थूल रूप प्रदान कर देते हैं तब जनमानस उसके कार्यों में अपनी उन अपेक्षाओं एवं विश्वासों का मूर्तरूप पाता है, जिसकी मात्र अनुभूति ही वह कर पाता है क्रियान्वयन नहीं। प्रताप का कद तब और भी बढ़ जाता है जब लगता है कि जिन साधारण लोगों से उसने प्यार किया उनके लिए वो संघर्ष करता रहा। प्रताप के मुगल प्रतिरोध में अव्यक्त द्विधा अथवा द्वन्द्वनहीं था इसी कारण वह साधन पक्ष के कमजोर होने के बाद भी सबल बनकर उभरा।

साथ ही उसका सामंजस्य व्यक्तित्व उस भेदभाव अथवा दिखावे से मुक्त था जिस दोहरे चरित्र के स्तर पर उसके समकालीन प्रतिद्वंद्वी जी रहे थे। प्रताप ने प्राचीन एवं मध्यकालीन मूल्यों को छोड़े बिना ही नवीन की चुनौती स्वीकार कर ली थी। जो लोग अपनी संस्कृति से परांगमुख हो गये थे, वे देशीय जीवन से उखड़ से गये। इसी से उनकी प्रेरणाओं के स्त्रोतों में न्यूनता हो गई और उनकी नैतिक एवं आध्यात्मिक पूंजी का ह्रास हो गया। यही कारण है कि उनमें से अनेक व्यक्ति प्रतिभाशाली और गुणज्ञ होने के बावजूद इतिहास पर गहरा एवं स्थायी प्रभाव ना डाल सके। प्रताप ने अन्तरतम की अनुप्रेरणाओं के साथ एकत्व एवं अद्वैत स्थापित कर शक्ति प्राप्त की।

मध्ययुग में चली विदेशी शक्ति की आँधी के सम्मुख कोई भी केन्द्रीय अथवा प्रादेशिक शक्ति टिक नहीं सकी। मात्र प्रताप ही क्षात्र धर्म का तेज लेकर दृढ़ एवं विशाल शिलाखण्ड की तरह उस आंधी के मार्ग को अवरुद्ध करता रहा। इस सम्पूर्ण आर्यावर्त्त में एकमात्र अरावली की उपत्यकाओं ने ही उस ऐश्वर्यशाली, साधन सम्पन्न मुगल बादशाह अकबर को अपनी उपलब्धियों के 'अर्थहीन' होने का पाठ पढ़ाया था। साथ ही अपनी 'अस्मिता' को सस्ते दामों में बेच चुके राजपूताना के अन्य शासकों को आत्मालोचन करने हेतु बाध्य भी किया था। सांस्कृतिक, नैतिक मूल्य एवं दार्शनिक तत्व चिन्तन क्रियात्मक होने पर ही सार्थकता प्राप्त करते हैं जो व्यक्ति इस मूलभूत पक्ष को अपार कठिनाइयों के बाद भी व्यवहारिक धरातल पर जीता है वहीं सदियों-सदियों तक दिशासूचक बन जाता है। इसी कारण प्रताप भारत की अनमोल संस्कृति के सच्चे वंशधर के रुप में परिलक्षित होता है। वह क्षात्र धर्म, दर्शन, संस्कृति, मानवीय मूल्य एवं नैतिकता का मूर्तिमान स्वरुप था। आज मूल्य क्षरण का दौर चल रहा है अतः प्रताप की उपादेयता एवं प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। राजपूतों की 'बलिदान' की जातिगत मानसिकता को विदा करके दीर्घावधि संघर्ष की नूतनता को अपना कर मेवाड़ की सम्पूर्ण प्रजा को ही उसने सैनानी बना दिया। मेवाड़ की आन्तरिक सुरक्षा एवं मुगलों के साम्राज्य विस्तार को रोकने में समान रुप से ध्यान दिया। आन्तरिक व बाह्य दोनों मोर्चों पर प्रताप ने जो संतुलन रखा वही उसकी सफलता का मूल मंत्र है। भारत के आधुनिक स्वतंत्रता संग्राम में भी इसी मूलमंत्र को अपना कर अंग्रेजों को हर मोर्चे पर शिकस्त दी गई। प्रताप के व्यक्तित्व से ही नहीं अपितु उसकी कार्यशैली से भी स्वतंत्रता संग्राम में कई मार्गदर्शन मिले। शाश्वत मूल्यों के लिए किया गया संघर्ष सर्वदा प्रासंगिक एवं युगयुगीन बना रहता है।

डॉक्टर चन्द्रशेखर शर्मा एक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ हैं। आपने महाराणा प्रताप के जीवन के विभिन्न स्रोतों को खंगाल कर जो शोध प्रस्तुत किया है उसने महाराणा प्रताप के वास्तविक चरित्र और विशेष रूप से हल्दीघाटी के युद्ध की वास्तविकता को पाठकों के समक्ष रखा है। उन्होंने निर्विवाद रूप से यह सिद्ध किया है कि हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप की विजय हुई थी। दुर्भाग्य की बात है कि राजकीय संरक्षण में लगे शिलापट्ट पर भी इस बात का अंकन नहीं है। अब सरकार द्वारा यह स्वीकार कर लिया गया है इस तथ्य को शिलापट्ट पर अंकित करा दिया जाएगा। डॉक्टर चन्द्रशेखर को जितना धन्यवाद दिया जाए वह कम है। उनके शोधपत्र के आधार पर जो पुस्तक है उसकी पीठिका के रूप में कुछ बिन्दु यहाँ उद्धृत किया है। -सम्पादक

- डॉ.चन्द्रशेखर शर्मा (सहआचार्य इतिहास)
राज. मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर
(महाराणा प्रताप पर प्रथम विद्यावाचस्पति की उपाधि)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ रै	१		१ नि		२	२ र	२	त्मा २	
३	३ स्ति	३	४	४ द्धा	४	४	४ रो	४	णि
५	५ न		६	६	६ म	७	७ रि	७	७ ल

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. 'जान श्रुति' शूद्र ने वेद किस मुनि के पास रहकर पढ़ा था?
२. कर्मों के फल भोगाने हारा कौन है?
३. जो वेद ईश्वर की आज्ञा, वेदविरुद्ध पोपलीला चलावे वह क्या कहाता है?
४. 'छादयत्यर्क मिन्दुर्विधुं भूमिभाः' यह किसका वचन है?
५. दाता कितने प्रकार के होते हैं?
६. जो कीर्ति वा स्वार्थ के लिए दान करे वह किस प्रकार का दाता कहाता है?
७. जो चोरी-डाका मार, छल-कपट कर, पराया धन हर, वैष्णवों के पास धर, प्रसन्न होता था उस वैष्णव भक्त का क्या नाम था?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०२२

सनातन धर्म रक्षक आर्य समाज

'आर्य' शब्द हमारी संस्कृति का सम्मानजनक शब्द है। हमारे वेदों में सनातन धर्म ग्रन्थों में रामायण, गीता, महाभारत, नीतियों में श्रेष्ठ पुरुषों को 'आर्य' कहकर ही सम्बोधित किया जाता था। भगवान राम, भगवान श्रीकृष्ण, धर्मराज युधिष्ठिर, अर्जुन को भी 'आर्य' नाम से सम्बोधित किया गया है।

'हिन्दू' शब्द मुगलकालीन समय से मुगलों द्वारा दिया गया है। आर्य का अर्थ होता है श्रेष्ठ। आर्य समाज की ठीक से पहचान न होने के कारण समाज इसके महत्व को समझ ही नहीं पाया। जबकि सत्य सनातन धर्म को पूरी तरह मानते हुए और उसका प्रचार प्रसार करना इसका मुख्य उद्देश्य है। भारतवर्ष के अतिरिक्त ३० से अधिक देशों में इसकी शाखाएँ फैली हुई हैं, जिसके अन्तर्गत आर्यसमाज मन्दिर, वृद्धाश्रम, गुरुकुल, अनाथालय, अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, गौ शालाएँ, व्यायामशालाएँ, योगासन केन्द्र आदि हजारों की संख्या में संचालित होते हैं।

सनातन धर्म का उद्गम वेदों से हुआ है। ये वेद परमात्मा की वाणी है। संसार का सबसे पहला ज्ञान, सबसे पहली संस्कृति, यही ईश्वरीय ज्ञान है। यह सबके लिए सदा के लिए है तथा मानव जीवन की सभी पवित्र इच्छाओं को पूर्ण करने का ज्ञान इसमें समाहित है। सुख, शान्ति, मोक्ष, सम्पन्नता, स्वास्थ्य, ज्ञान, विज्ञान, व्यापार, परिवार, समाज, राष्ट्र और अनेक विद्याओं का भण्डार यह वेद है। यह पूर्ण ज्ञान का भण्डार इसलिए है क्योंकि यह उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान है। यह सदा से है और सदा रहेगा, इसलिए इसे सनातन कहते हैं। बस, आर्यसमाज इसी पवित्र सनातन धर्म को मानता है और उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए बनी एक संस्था है। आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित किया गया है किन्तु उनकी अपनी कोई विचारधारा के आधार पर या किसी अन्य विचारधारा के आधार पर स्थापित नहीं है, यह पूर्ण सनातन वैदिक धर्म पर आधारित है।

आर्य समाज भगवान श्रीरामचन्द्र और भगवान श्रीकृष्ण जी के आदर्शों को पूर्ण स्थान देता है। क्योंकि जिस ज्ञान का सन्देश इन दोनों महापुरुषों ने दिया वह सब वेदों के अनुसार ही है। इनका अपना जीवन पूर्ण रूप से सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार ही था।

आर्य समाज आध्यात्म, समाज और राष्ट्रीय विचारधारा के कार्यों को करने वाला विश्व का एकमात्र संगठन है जिसमें इन तीनों विषयों पर कार्य किया जाता है।

आर्यसमाज की कुछ उपलब्धियाँ और मान्यताएँ इस प्रकार हैं-

1. **वेदों से परिचय-** वेदों के सम्बन्ध में यह कहा जाता था कि वेद तो लुप्त हो गए, पाताल में चले गए। किन्तु महर्षि दयानन्द के प्रयास से पुनः वेदों का परिचय समाज को हुआ और आर्य समाज ने उसे देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी पहुँचाने का कार्य किया।
2. **सबको पढ़ने का अधिकार-** वेद के सम्बन्ध में यह प्रतिबन्ध था कि वेद स्त्री और शूद्र को पढ़ने या सुनने का अधिकार भी नहीं था। किन्तु आज आर्य समाज के प्रयास से हजारों महिलाओं ने एवं जिन्हें शूद्र मानकर उपेक्षित किया जाता था उन्हें भी यह अधिकार आर्य समाज ने दिलवाया। अनेक महिलाओं ने वेद पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया और वे वेद की विद्वान् हैं।
3. **जातिवाद का अन्त-** आर्य समाज जन्म से जाति को नहीं मानता। समस्त मानव एक ही जाति के हैं। गुण, कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था को आर्य समाज मानता है।
4. **स्त्री शिक्षा-** स्त्री को शिक्षा का अधिकार नहीं है, ऐसी मान्यता प्रचलित थी। महर्षि दयानन्द ने इसका खण्डन

किया और सबसे पहला कन्या विद्यालय आर्य समाज की ओर से प्रारम्भ किया।

5. विधवा विवाह- महर्षि दयानन्द के पूर्व विधवा समाज के लिए एक अपशगुन समझी जाती थी। आर्य समाज ने इस कुरीति का विरोध किया तथा विधवा विवाह को मान्यता दिलवाने का प्रयास किया।

6. छुआछूत का विरोध- आर्य समाज ने सबसे पहले जातिगत ऊँच-नींच के भेदभाव को तोड़ने की पहल की। अछूतोद्धार के सम्बन्ध में आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में सबसे पहले यह प्रस्ताव रखा।

7. राष्ट्र चिन्तन- परतन्त्र भारत को आजाद कराने में महर्षि दयानन्द को प्रथम पुरोधा कहा गया। सन् १८५७ के समय से ही महर्षि ने अंग्रेज शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था। स्वतन्त्रता आन्दोलनकारियों के अनुसार स्वतंत्रता के लिए ८० प्रतिशत व्यक्ति आर्य समाज के माध्यम से आए थे।

8. गुरुकुल- सनातन धर्म की शिक्षा व संस्कृति के ज्ञान केन्द्र गुरुकुल थे, प्रायः गुरुकुल परम्परा लुप्त हो चुकी थी। आर्य समाज ने उन्हें पुनः शुरू किया।

9. गौरक्षा अभियान- ब्रिटिश शासन के समय से ही महर्षि ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने व गौवध पर पाबन्दी लगवाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया था। 'गौकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखकर गौवंश के महत्व को बताया।

10. हिन्दी को प्रोत्साहन- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए सर्वप्रथम प्रयास किया।

11. यज्ञ- सनातन धर्म में यज्ञ का बहुत महत्व है। जितने भी शुभ कर्म होते हैं उनमें यज्ञ अवश्य किया जाता है। किन्तु यज्ञ का स्वरूप बिगाड़ दिया गया था। ऐसी स्थिति में यज्ञ के सनातन स्वरूप को पुनः आर्य समाज ने स्थापित किया, जन-जन तक उसका प्रचार किया और लाखों व्यक्ति नित्य हवन करने लगे।

12. शुद्धि संस्कार व सनातन धर्म रक्षा- सनातन धर्म से दूर हो गए उन अनेक हिन्दूओं को पुनः शुद्धि कर सनातन धर्म में प्रवेश देने का कार्य आर्यसमाज ने ही प्रारम्भ किया। सन् १९८३ में दक्षिण भारत मीनाक्षीपुरम् में पूरे गाँव को मुस्लिम बना दिया था। शिव मन्दिर को मस्जिद बना दिया था। सम्पूर्ण भारत से आर्य समाज द्वारा आन्दोलन किया गया और वहाँ जाकर हजारों आर्य समाजियों ने शुद्धि हेतु प्रयास किया और पुनः स्थापना की।

काश्मीर में जब हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ना प्रारम्भ हुआ तो उनकी ओर से आर्य समाज ने प्रयास किया और शासन से करोड़ों का मुआवजा दिलवाया।

ऐसे अनेक कार्य है, जिनमें आर्य समाज सनातन धर्म की रक्षा के लिए आगे आया और संघर्ष किया बलिदान भी दिया।

13. धर्म व ईश्वर- सबका धर्म व ईश्वर एक है, बिना धर्म के मानव, मानव नहीं तथा बिना ईश्वर के सानिध्य के जीवन सफल नहीं है। बिना ईश्वर के कुछ भी सम्भव नहीं है।

14. पंच महायज्ञ- प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (संध्या, ईश्वर का गुणगान), देव यज्ञ- हवन, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ- माता-पिता, गुरु की सेवा सत्कार, अतिथि यज्ञ घर आए हितैषी, विद्वान् का सत्कार, बलिवैश्व यज्ञ- अपने पर आश्रित पशु, कीट, पंतगों को भोजन सम्पन्न कराने चाहिए।

15. बाल विवाह, सती प्रथा एवं दहेज का विरोध किया।

आर्य समाज न होता तो, वेदों का मान कहाँ होता,
सब कुछ होता लेकिन, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।
धर्म-कर्म की गजियां, अपनी-अपनी राहों पर जाती है,
राह भिन्न हो तो मंजिल दूर रह जाती है।
कर्म महान् न हो तो, कर्त्ता कभी महान् नहीं होता,
सब कुछ होता लेकिन, हिन्दी, हिन्दु, हिन्दुस्तान नहीं होता।।

आर्य समाज के १० नियमों में ये दो भी हैं-

- संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

तो आइए, मानव हितैषी संगठन से जुड़कर सनातन धर्म, समाज व राष्ट्र की उन्नति में भागीदार बनिए। साथ ही प्रत्येक रविवार को आर्य समाज के सत्संग में पधारकर जीवन लाभ प्राप्त करें।

- प्रकाश आर्य
मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्वास्थ्य

एलोवेरा है गुणकारी

- वजन कम करने में मददगार है एलोवेरा जूस
- एलोवेरा जूस से पाचन हो सकता है दुरुस्त
- कब्ज की परेशानी दूर कर सकता है एलोवेरा जूस

गर्मियों में सेहत से जुड़ी कई तरह की परेशानियां होने की संभावना बढ़ जाती है। इन परेशानियों में पेट दर्द, गैस की परेशानी, डिहाइड्रेशन, ड्राई स्किन इत्यादि शामिल हैं। इन परेशानियों को कम करने के लिए आप एलोवेरा जूस का सेवन कर सकते हैं। जी हां, नियमित रूप से एलोवेरा का जूस पीने से गर्मियों में होने वाली परेशानियों को दूर किया जा सकता है। वहीं, खाली पेट अगर आप नियमित रूप से एलोवेरा जूस का सेवन करते हैं, तो यह पेट की चर्बी को कम करने में भी लाभकारी होता है। साथ ही यह गर्मियों के दिनों में होने वाली डिहाइड्रेशन की समस्या दूर करने में लाभकारी है।

खाली पेट एलोवेरा जूस पीने के फायदे

वजन कम करने में लाभकारी- गर्मियों में खाली पेट एलोवेरा जूस का नियमित रूप से सेवन करने से शरीर का वजन कम हो सकता है। साथ ही यह पेट की चर्बी को पिघलाने में आपकी मदद कर सकता है। इसका जूस पीने के लिए रोजाना सुबह ताजी पत्तियों से जूस निकाल लें। अब इस जूस को १ गिलास पानी में मिक्स करके पी जाएं। नियमित रूप से इस जूस के सेवन से वजन कम होगा।

सिरदर्द की परेशानी करे दूर- नियमित रूप से खाली पेट एलोवेरा जूस का सेवन करने से सिरदर्द की परेशानी को कम किया जा सकता है। एलोवेरा जूस में दर्द निवारक गुण पाया जाता है, जो सिर के दर्द को कम कर सकता है।

कब्ज से राहत- गर्मी के दिनों में कब्ज से जुड़ी परेशानी होने की संभावना काफी ज्यादा होती है। कब्ज से राहत पाने के लिए आप नियमित रूप से एलोवेरा जूस का सेवन करें। इससे कब्ज की समस्या दूर होगी। साथ ही पेट से जुड़ी अन्य परेशानी जैसे- गैस, ब्लॉटिंग इत्यादि दूर हो सकती है।

एनीमिया से बचाव- शरीर में आयन की कमी को दूर करने के लिए एलोवेरा जूस का सेवन करना आपके लिए लाभकारी हो सकता है। इस जूस के पीने से शरीर में रेड ब्लड सेल्स को बढ़ाया जा सकता है।

अहिंसा की अभिव्यक्ति

कथा सरित

योगसूत्रों के रचयिता महर्षि पतंजलि कहते हैं कि अहिंसा भाव में प्रतिष्ठित व्यक्ति के सान्निध्य में आकर पशु-पक्षी भी अपने स्वाभाविक वैर-भाव को त्याग देते हैं। भारतीय काव्य में, आश्रमों के वर्णन में हम पढ़ते हैं कि वहां बाघ और हिरण एक साथ निर्भय व स्वच्छन्द भाव से विचरण किया करते थे। यह मात्र एक काव्यात्मक अतिशयोक्ति नहीं, अपितु सत्य है।

अहिंसा का अर्थ विचारों और कर्मों द्वारा किसी अन्य को क्षति पहुंचाने से विरत रहना मात्र नहीं है। इसमें सबके प्रति विशुद्ध प्रेम-भाव भी आ जाता है। प्रेम, मैत्री और दया अहिंसा के अन्य पहलू हैं। जब साधु सन्त अहिंसा की साधना करते हैं, तो उनके हृदय से पवित्र प्रेम की धाराएं निःसृत होती हैं। ऐसे उदाहरण दिखते हैं, जिनमें ध्यान, प्रार्थना जैसी साधना न करने वाले लोग भी महापुरुषों के सानिध्य में शांति और सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनमें ऐसे महात्माओं के सानिध्य में पशु-पक्षी भी अतीव सुख तथा निर्भयता का अनुभव करते हैं।

जब रमण महर्षि अपने आश्रम में रहते थे, तो जंगली पशु-पक्षी निर्भय होकर उनके हाथों से खाने की चीजें लेकर खाया करते थे। पशु-पक्षियों के प्रति उनका प्रेम बेमिसाल था। पशुओं के लिए वे उभयनिष्ठ नपुंसक लिंग का प्रयोग न करके पुल्लिंग या स्त्रीलिंग वाचक सर्वनाम का प्रयोग करते थे। यदि वे पूछते, क्या बच्चों का भोजन हो गया? तो इसका अर्थ होता, क्या कुत्तों ने खा लिया?यदि वे पूछते, क्या लक्ष्मी ने भोजन किया?तो इसका अर्थ होता, क्या लक्ष्मी नाम की गाय को चारा मिला? वे मोरों के आवाज की नकल करके उन्हें बुलाया करते और मोर उनके पास आकर दाल, चावल या आम लेकर जंगल में वापस लौट जाते। गौरैयां उनके हाथों पर बैठी उनकी हथेली से दाना चुगा करती। अपनी मृत्यु से एक दिन पूर्व यद्यपि वे तीव्र पीड़ा से ग्रस्त थे, तो भी मोरों का कलरव सुनकर उन्होंने पूछा, क्या उनका रोज का भोजन उन्हें मिल गया है? वे आश्रम परिसर में कभी सांपों को मारने का अनुमति नहीं देते वे कहते, हम यहां उनके राज्य में आए हैं। अतः उन्हें हानि पहुंचाना उचित नहीं है। वे हमें हानि पहुंचाना नहीं चाहते।' जब एक बार वे एक पहाड़ी पर बैठे थे, तो एक नाग उनके पांवों पर चढ़कर वहां थोड़ा रेंगकर चुपचाप चला गया। वे अविचलित और और निर्भय बैठे रहे। बाद में जब उनसे पूछा गया कि नाग के रेंगने पर उनको कैसा अनुभव हुआ, तो उन्होंने बताया,शीतल, मुलायम।'

आश्रम में कमला नामक एक बुद्धिमती कुतिया थी। महर्षि उसे आश्रम के भक्तों और अतिथियों को पहाड़ी के चारों और घुमा लाने को कहते। वह उन लोगों को आश्रम के आसपास की मूर्तियों, सरोवरों और मंदिरों का दर्शन करा लाती।

रमण महर्षि परम ज्ञानी के सहज सद्गुणों से परिपूर्ण थे। वे ज्ञान, निर्भयता, प्रेम दया और सहानुभूति के आगार थे। उन्होंने

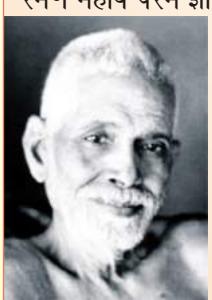

पशुओं के व्यवहारों, आवाजों और उनके सामाजिक आचारों का बड़ी गहराई से निरीक्षण किया था। बन्दरों के बीच कोई झगड़ा होने पर वे हस्तक्षेप करते और फिर महर्षि की उपस्थिति में ही बन्दर अपने झगड़े सुलझा लेते। सामान्यतः जंगल से भागकर गांवों में आने वाले बन्दर पकड़ लिए जाते हैं और लोग उन्हें पालते पोसते हैं। फिर कभी कभी उन बन्दरों के जंगल में लौट आने पर जंगल के बन्दर उन्हें अस्वीकार करके उन्हें बहिष्कृत कर देते। परन्तु रमण महर्षि का सत्संग पा चुके बन्दर इस निर्वासन से मुक्त थे। जंगल के बन्दर ऐसे बन्दरों का अपनी जाति में स्वागत करके उन्हें स्वीकार कर लेते। एक बार महर्षि जंगल में घूमने गए। जब उन्हें भूख लगी, तो न जाने कहां से वहां बन्दरों का एक झुण्ड आ गया। वे बन्दर एक फलदार वृक्ष पर चढ़ गए और कुछ फल नीचे गिराकर, उन्हें उठाए बिना ही वहां से चले गए।

प्रेम की शक्ति असीम है। रमण महर्षि सबके मित्र थे। उन्होंने विश्व के सामने पशु-पक्षियों को परम स्नेह की दृष्टि से देखने का आदर्श प्रस्तुत किया।

– साभार– जीने की कला

समाचार

होलिकोत्सव सम्पन्न

'वेदों का डंका आलम में, बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।' नवसष्येष्टि पर्व होलिकोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य समाज, नेमदारगंज द्वारा संजय सत्यार्थी के निर्देशन में वैदिक झुमटा में लोकप्रिय गीतों तथा सन्तों के सदुपदेश दोहों से पूरे गाँव में भ्रमण से जागृति का जुलूस निकाला गया। जिसमें रणजीत कुमार, लखीनारायण आर्य, हर्षवर्द्धन, राहुल, गौतम, किशोर, गौरव, मुकेन्द्र, राकेश, संजय कुमार, मोक्षानन्द, वेदप्रकाश, अश्वनी आर्य आदि का सहयोग रहा।

आर्यावर्त्त वैदिक विज्ञान संस्थान का शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागलभीम-भीनमाल के तत्त्वाधान में सिरोही नगर में स्थित विजय पताका महातीर्थ नामक जैन धर्मशाला में त्रिदिवसीय वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान महोत्सव ८ से १० अप्रैल २०२२ को सम्पन्न हुआ। श्रीराम नवमी के शुभ अवसर पर सिरोही नगर से लगभग दस किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग के निकट पालड़ी-एम ग्राम में तीस बीघा भूमि में 'आर्यावर्त्त वैदिक विज्ञान शोध संस्थान' का शिलान्यास सन्त श्री विदेह योगी जी के ब्रह्मत्व में, न्यास के प्रधान संरक्षक एवं बागपत, उत्तर प्रदेश के सांसद आर्यनेता डॉ. सत्यपाल सिंह जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव में न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह जी कोठारी (पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान), पद्मश्री रघुवीर सिंह जी देवड़ा (पूर्व नरेश, सिरोही), श्री संयम जी लोढ़ा (मुख्यमंत्री सलाहकार एवं विधायक, सिरोही), श्री देवी सिंह जी भाटी (पूर्व सिंचाई मन्त्री, राजस्थान सरकार), कर्नल श्री पूरन सिंह जी राठौड़ (जयपुर), आचार्या डॉ. सूर्या देवी जी चतुर्वेदा (शिवगंज), आचार्या डॉ. पवित्रा जी (सासनी, हाथरस), श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक सभा), श्री दीनदयाल जी गुप्ता (चेयरमैन, डॉलर फाउण्डेशन, कोलकाता), श्री विनीत कुमार जी आर्य (आई.आर.एस., फरीदाबाद), डॉ. जितेन्द्र जी नागर (डीसा, गुजरात), श्री सुरेश जी जैन (सी.ए., मुम्बई), डॉ. शिवदर्शन जी मलिक (रोहतक), प्रो. रामगोपाल जी (पूर्व निदेशक, डी.आर.डी.ओ.), डॉ. भूपसिंह जी (भिवानी), डॉ. वेदप्रकाश जी आर्य (अजमेर), कुंवर भवानी सिंह जी (जालोर), डॉ. अमृतलाल जी तापड़िया (उदयपुर), श्री दिलीप सिंह जी माडानी (पूर्व प्रधान, शिवगंज) आदि गणमान्य जन अतिथि एवं वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधार एवं मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी (वैदिक वैज्ञानिक, संस्थापक, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास एवं आर्यावर्त्त वैदिक विज्ञान संस्थान) थे। उन्होंने राष्ट्र एवं विश्व की सभी कठिन समस्याओं का समाधान केवल वैदिक विज्ञान द्वारा होना सिद्ध किया। उन्होंने वेदों एवं सभी आर्ष ग्रन्थों के विशुद्ध विज्ञान को प्रकाशित करके, सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व को बचाने की मार्मिक अपील सबसे की। उनके शिष्य श्री विशाल जी आर्य (संस्थान उपाचार्य) ने वैदिक रश्मि सिद्धान्त के आधार पर सृष्टि के आरम्भिक चरणों के विज्ञान के साथ-साथ योग एवं मुक्ति को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया। श्री विशाल जी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती मधुलिका जी आर्या (संस्थान उपाचार्या) ने आचार्य श्री अग्निव्रत नैष्ठिक एवं सायण आदि अन्य भाष्यकारों द्वारा ऐतरेय ब्राह्मण की भाष्य शैली का तुलनात्मक विवेचना करते हुए, आचार्य श्री की शैली की वैज्ञानिकता को प्रतिपादित किया। श्री ब्रह्मचारी ओम् जी ने वैदिक छन्द एवं मरुद् रश्मियों व प्राणादि रश्मियों के क्रियाविज्ञान को दर्शाते हुए, सृष्टि उत्पत्ति में उनकी भूमिका को रेखांकित किया। श्री ब्रह्मचारी श्रवण ने आकाश तत्त्व (स्पेस) के विषय में वर्त्तमान भौतिकी की मान्यताओं पर अनेक प्रश्न उठाते हुए, वैदिक विज्ञान के पक्ष को प्रस्तुत करके आकाश के स्वरूप और संरचना को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया।

विभिन्न सत्रों का संचालन आर्य विद्वान् मोक्षराज जी आर्य (अजमेर) एवं श्री अशोक जी आर्य (अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर) श्री कानसिंह राणावत (सुमेरपुर) और श्रीमती मधुलिका आर्या ने कुशलतापूर्वक किया। प्रथम दो दिन के यज्ञ का ब्रह्मत्व आचार्या सूर्यदेवी जी ने किया।

इस कार्यक्रम में भारत के लगभग १५ प्रान्तों के प्रबुद्ध युवाओं और आर्यजनों ने भाग लिया। श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास के मन्त्री डॉ. टी.सी. डामोर (सेवानिवृत्त आई.जी. पुलिस एवं पूर्व कुलपति) ने सभी अतिथियों, विद्वानों एवं आगन्तुकों का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के पश्चात् न्यास की वार्षिक बैठक में न्यायमूर्ति सज्जनसिंह जी कोठारी को न्यासी तथा सन्त श्री विदेह योगी जी को स्मृतिशेष श्री आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश के स्थान पर न्यास का संरक्षक बनाया गया।

– डॉ. टी.सी. डामोर, मन्त्री-श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज सज्जन नगर उदयपुर के वार्षिक चुनावों में श्री देवीलाल गर्ग, श्री हेमांग जोशी और श्रीमती दीपिका पंड्या को क्रमशः प्रधान, मंत्री और कोषाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित किया गया। इनको तथा अन्य पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी सदस्यों को न्यास की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

– भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

आर्य समाज नैनीताल में आर्य कार्यकर्त्ता बैठक सम्पन्न

"चरित्रवान व नशा मुक्त युवा पीढ़ी का निर्माण करेंगे- राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य"

रविवार १७ अप्रैल २०२२, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तराखण्ड की आर्य कार्यकर्त्ता बैठक आर्य समाज नैनीताल में सम्पन्न हुई।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज चरित्रवान नशा मुक्त युवा पीढ़ी का निर्माण करेगा। युवा पीढ़ी को संस्कारित, सुसंस्कृत व दिशा देने के लिए वीर भरत की जन्म स्थली गुरुकुल कण्व आश्रम, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल में 'विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' दिनांक ४ जून से १२ जून २०२२ तक आयोजित किया जायेगा, जिसमें संध्या, यज्ञ, वैदिक संस्कृति की जानकारी के साथ साथ योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, जूड़ो-कराटे आदि आत्मरक्षा का शिक्षण भी दिया जायेगा। आयु- १२ वर्ष से १८ वर्ष तक के युवक भाग लेंगे साथ ही योग साधना शिविर भी चलेगा।

– प्रवीण आर्य, मीडिया प्रभारी, चलभाष- ९९११४०४४२३

दिल्ली। भारत के ७३ वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आर्य समाज के टीवी चैनल आर्य सन्देश टीवी द्वारा राष्ट्र को गौरवान्वित करने वाले महापुरुषों को समर्पित ऑनलाइन फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता २०२२ का आयोजन किया गया। नील फाउण्डेशन के सहयोग से आयोजित इस प्रतियोगिता में देश-विदेश के ८००० से अधिक बच्चों ने अपनी प्रविष्टि भेजी जिनमें से लगभग १२०० प्रविष्टियों का चयन कर निर्णायक मण्डल द्वारा विभिन्न कसौटियों पर परखा गया। आयु के आधार पर प्रतियोगियों को दो वर्गों में बांटा गया। ३ वर्ष से ८ वर्ष के बच्चों को प्रथम वर्ग में और ९ वर्ष से १५ वर्ष के बच्चों को द्वितीय वर्ग में रखा गया।

प्रतियोगिता में केवल वेशभूषा ही नहीं बल्कि महापुरुष के किसी प्रेरक वाक्य की प्रस्तुति भी करनी थी। दोनों ही वर्गों में बच्चों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ दीं। जिसके चलते विजेता चुनना अत्यन्त कठिन था। अंततः निर्णायक मण्डल ने छोटे बच्चों के प्रथम वर्ग में हर्ष परेवा, अनाया कंसल, विराजस शर्मा, परवी सोनी, रेयांश महाजन, संस्कृति, हितांशी को विजेता घोषित किया। इसी प्रकार द्वितीय वर्ग में श्रीहान मेहता, यश्वी आर्या, शाम्भवी गुप्ता, ऋषि कुमार, ईश्वरी सिद्धेश कंदोलकर, कामाक्षी बाली को विजेता घोषित किया। प्रत्येक विजेता को ३१०० रुपये के नकद पुरस्कार दिए जायेंगे। साथ ही दोनों वर्गों में लगभग ८० बच्चों को विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निर्णायक मण्डल में शामिल श्रीमती सरोज यादव, श्रीमती सुनीता बुग्गा, श्रीमती शालिनी आर्या ने कई दिनों के अथक परिश्रम के बाद अपना निर्णय दिया। इस अवसर पर नील फाउण्डेशन के चेयरमैन श्री सुरेश कुमार आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य , डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के सचिव श्री अरविन्द घई जी एवं श्री अजय सहगल जी भी ऑनलाइन जुड़े और बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम का प्रसारण २६ से ३१ जनवरी २०२२ तक आर्य संदेश टीवी पर किया गया।

नवसंवत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

दिनांक २ अप्रैल २०२२ शनिवार को आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर के तत्वावधान मे आर्य समाज भवन के बाहर आम सड़क के निकट नवसंवत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस पर समस्त प्राणीमात्र के कल्याणार्थ विश्वशान्ति यज्ञ का अनुष्ठान श्री इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में प्रातः ८ बजे से ग्यारह बजे तक आयोजित हुआ। जिसमें सभी आगन्तुक जनों को ग्यारह वेद मंत्रों से आहुति देने का अवसर प्रदान किया गया।

स्वागत आर्य समाज के प्रधान श्री भंवरलाल जी आर्य ने किया। भजन श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के मंत्री श्री भवानीदास जी आर्य ने प्रस्तुत किया और अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में आर्य समाज के नियमों पर मनन करते हुए आर्य समाज के बहुआयामी आन्दोलन को यथार्थस्वरूप में समाज के समक्ष रखने का आह्वान किया। इस अवसर पर आर्य समाज परिसर में ध्वजारोहण भी किया गया। सभी ने इस वर्ष में आर्य समाज की प्रगति और प्रतिष्ठा के लिए सार्थक कार्य करने का संकल्प लिया। सभी को धन्यवाद श्री अमृतलाल जी तापड़िया द्वारा अर्पित किया गया।

भारतीय नववर्ष पर निकली शोभायात्रा हुआ समारोह का आयोजन

"यदि दुनिया के नक्शे से भारत मिटा दिया जाए तो मानवता नहीं रहेगी।" - आचार्य दयासागर

सर्वहिन्दू समाज नववर्ष समिति के तत्वावधान में विशाल रैली एवं समारोह का आयोजन किया गया। कई सामाजिक संस्थाओं एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों द्वारा शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। शोभायात्रा का चित्तौड़ीगेट पर प्रदेश के सहकारिता मंत्री उदयलाल आंजना सहित कांग्रेसजनों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत अभिनन्दन किया। पूर्व मंत्री श्रीचन्द कृपलानी पूरी शोभायात्रा में साथ रहते हुए कार्यक्रम के अन्त तक उपस्थित रहे। रैली का समापन बस स्टेण्ड परिसर पर समारोह के रूप में हुआ। जिसमें मुख्य वक्ता आचार्य दयासागर गुरुकुल थांदला, झाबुआ-मध्यप्रदेश एवं अजमेर निवासी आचार्य भवदेव शास्त्री संचालक-राजस्थान आर्यवीर दल ने सम्बोधित किया। उन्होंने बताया कि यदि दुनिया के नक्शे से भारत को मिटा दिया जाता है तो दुनिया में मानवता नहीं रहेगी। अन्त में नववर्ष पर आयोजित समारोह में आशीर्वचन के रूप में १२४ वर्षीय स्वामी सरवानन्द सरस्वती ने योग, प्राणायाम, आहार-विहार व विचार पर ध्यान देने पर जोर दिया।

श्री गौर मोहन माथुर को मातृशोक

श्रीमती शान्ति देवी जी के आकस्मिक निधन की सूचना पाकर अत्यन्त दुख हुआ। डॉ. भवानीलाल भारतीय जी की पत्नी होने के कारण उन्होंने एक सच्ची सहधर्मिणी के रूप में जो कर्तव्य निभाया था उसके कारण भारतीय जी ने विपुल साहित्य आर्य जगत् को भेंट किया। माताजी के आकस्मिक निधन से न्यास के सभी सदस्य और पदाधिकारी शोकाकुल हैं। हम न्यास की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १२/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १२/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरि.), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ.प्र.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरि.), श्री हीरा लाल बलई; उदयपुर (राज.), श्री गोपाल लाल राव; चित्तौड़गढ़ (राज.), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 16 पर अवश्य पढ़ें।

वेद ज्ञान की आवश्यकता

(स) '..... इस के कुण्ड में से घोड़ों के लगाम तक लोहू एक सौ कोश तक बह निकला। - यो.प्र.प.१४/आ.१६/२०

महर्षि दयानन्द इसकी समीक्षा में लिखते हैं- सौ कोश तक रुधिर का बहना असम्भव है क्योंकि रुधिर वायु लगने से झट जम जाता है। पुनः क्योंकर बह सकता है? इसलिए ऐसी बातें मिथ्या होती हैं।' कुरान से भी कुछ उदाहरण देखें-

(द) यहाँ तक कि पहुँचा जगह डूबने सूर्य की, पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के।।

- मं.४/सि.१६/सू.१८/आ.१७/आ.७४'

(य) 'इकट्ठा किया जावेगा। सूर्य और चाँद।।

- म.७/सि.२१/सू.७५/आ.६

उपरोक्त बातें किस प्रकार सृष्टिक्रम के विरुद्ध नितान्त अविद्या की बातें हैं पाठकों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं।

(५) नर हो या मादा ईश्वर के निकट सब बराबर हैं।

वेद में नारी की महिमा परक अनेक सन्देश मिलते हैं।

एक उदाहरण-

इन्द्राश्चिद्धा तदब्रवीत्स्त्रिया अशास्यं मनः।
उतो अह क्रतुं रघुम्।। - ऋ.८/३३/१७

भावार्थ- स्त्री के मन पर शासन (जोर-जबरदस्ती) न करें, वह अत्यन्त कोमल है। मनुष्य जीवन को सुखी बनाने हेतु यह आवश्यक भी है क्योंकि नारी ही गृहस्थ जीवन की धुरी है। अतएव जिन पुस्तकों में पुरुष और नारी में भेद हो, नारी को हेय समझा हो वह ईश्वरोक्त कैसे हो सकती हैं?

उदाहरणार्थ.....

(अ) '..... तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।'

- तौ.उत्प.प.३/आ.१४-१८ (बाइबल)

(ब) 'तुम्हारी बीबियाँ तुम्हारे लिए खेतियाँ हैं बस जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में।।

- म.१/सि.२/सू.२/आ.२११ (कुरान)

वेद ईश्वर प्रणीत

ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम।। - यजु. २३/६२

यह ब्रह्मा (परमात्मा) वेद रूपी वाणी का उत्तम स्थान है ऐसा मानो।

(६) परमेश्वर सत्यस्वरूप है कभी असत्य कथन न कर सकता है न अपनी प्रजा को ऐसी प्रेरणा दे सकता है। परन्तु पाठकगण बाइबल और कुरान से निम्न उदाहरण देखें-

(अ) 'परन्तु उस पेड़ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा तुम उसे न खाना और न छूना, न हो कि मर जाओ।

- तौरेत उत्पत्ति पर्व ३/आ.१-७

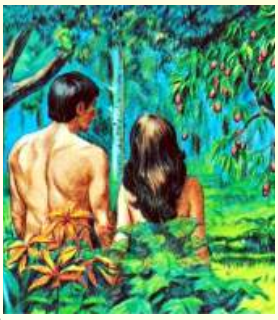

पाठकवृन्द! यह ज्ञान का पेड़ था जिसके फल खाने से ईश्वर ने आदम को मना किया था। अतएव यह स्पष्टतः ईश्वर का असत्य कथन है।

यही बात कुरान में भी पायी जाती है।

'हमने कहा कि ओ आदम! तू और तेरी जोरू बहिश्त में रहकर आनन्द में जहाँ चाहो खाओ, परन्तु मत समीप जाओ उस वृक्ष के कि पापी हो जाओगे। - म.१/सि.१/सू.२/आ.३३

अतः ईश्वर के गुण कर्म स्वभावानुकूल न होने से ये ग्रन्थ ईश्वरोक्त नहीं हो सकते।

(७) ईश्वर के कार्य में कोई न्यूनता नहीं होती क्योंकि वह सर्वज्ञ और निर्भ्रान्त है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ईश्वर अपने कार्य के परिणाम से अनभिज्ञ हो सकता है? और अपने किये पर पछता सकता है?

बाइबल का निम्न उदाहरण देखें-

'तब आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से ईश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ।' - तौ.पर्व.६/आ४-७

(८) जिन ग्रन्थों में अनैतिक बातें हो वे ईश्वरोक्त नहीं हो सकते। इस कसौटी पर ईश्वरोक्त कहे जाने वाले ग्रन्थों का परीक्षण करके देखें।

(अ) '..... सो लूत की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भिणी हुयीं। - तो.उत्प.पर्व १२/आ.३६

(ब) बस जब अदा कर ली जैद ने हाजित उससे, ब्याह दिया हमने तुझसे उसको ताकि न होवे ऊपर ईमानवालों के तंगी बीच बीबियों से लेपालकों उनके के, जब अदा कर लें उनसे हाजित और है आज्ञा खुदा की की गई।

- म.५/सि.२२/सू.३३/आ.व.३७

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

—Over 100 shades—
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CAPRI | ANKLE LENGTH | CHURIDAR | KURTI PANT
#GoGirlGo
Chitrangada Singh
Buy Online: www.dollarshoppe.in/
snapdeal
amazon.in
SHOPCLUES
www.dollarglobal.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

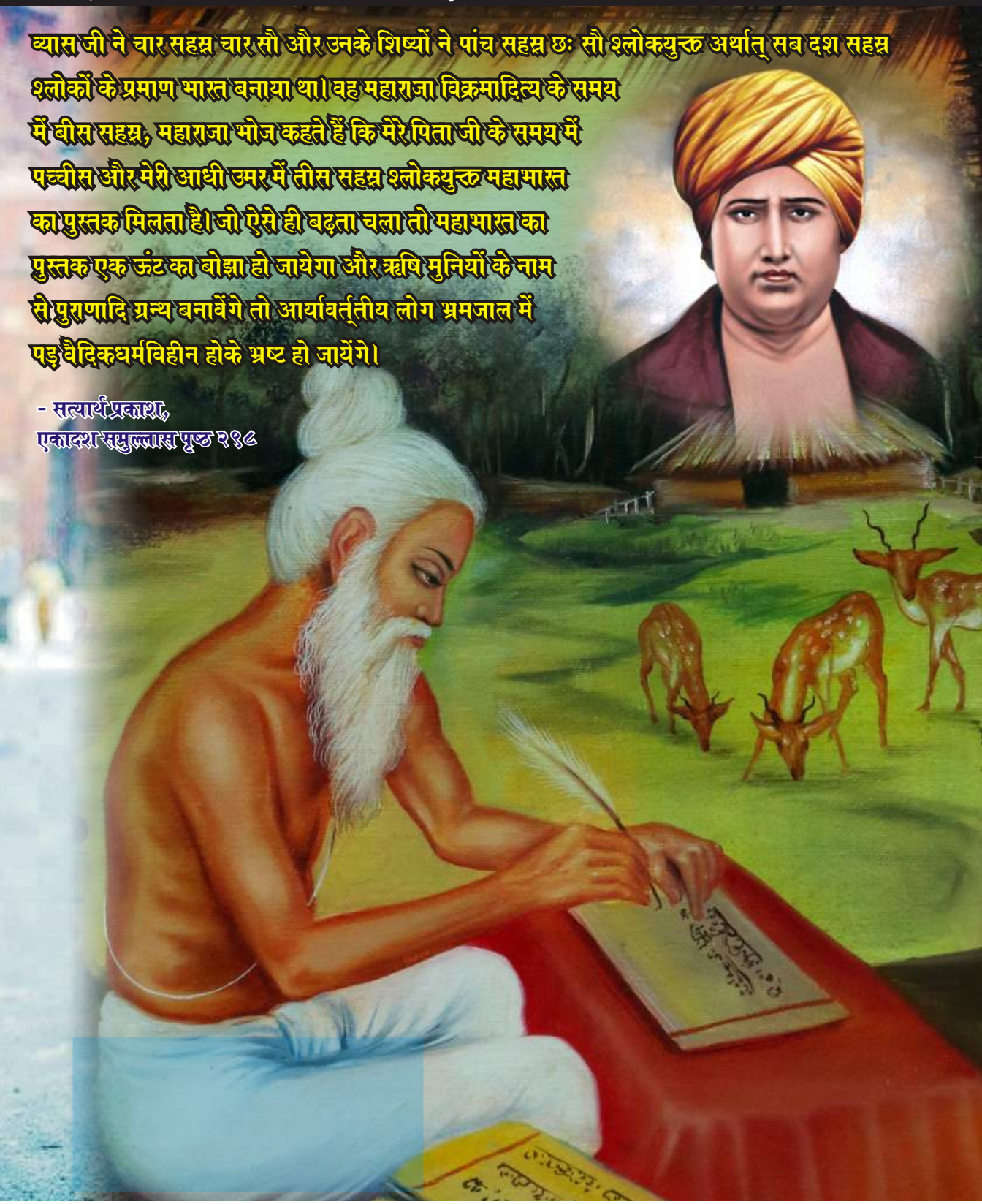

व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच सहस्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् सब दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिता जी के समय में पच्चीस और मेरी आधी उमर में तीस सहस्र श्लोकयुक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊंट का बोझा हो जायेगा और ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़ वैदिकधर्मविहीन होके भ्रष्ट हो जायेंगे।

- सत्यार्थप्रकाश,
एकादश समुल्लास पृष्ठ २९८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर